ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 28 सितम्बर 2014

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार 28 सितम्बर 2014 से 04 अक्तूबर 2014

आ.शु. 04 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 127, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

'हंसराज कॉलेज' दिल्ली विश्वविद्यालय का प्रथम 'महाविद्यालय' जहाँ यज्ञशाला का हुआ निर्माण

हंसराज कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय का एक मात्र कॉलेज है जहाँ युवा विद्यार्थियों को वैदिक एवं भारतीय संस्कृति से जोड़ने के लिए यज्ञशाला के निर्माण की पहल की गई। 5 सितम्बर अर्थात् शिक्षक दिवस के दिन महाविद्यालय में इस निर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन डी.ए.वी कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के अध्यक्ष श्री पूनम सूरी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मणि सूरी ने किया। उद्घाटन के उपरान्त श्री पूनम सूरी ने सपत्नी के इस नई यज्ञशाला में सैकड़ों विद्यार्थियों और शिक्षकों के साथ पहला हवन भी किया।

इस महाविद्यालय ने मासिक हवन की परम्परा की शुरूआत की है जो युवाओं में संस्कार और मूल्यों की प्रतिष्ठा के साथ–साथ उन्हें अपनी संस्कृति से जुड़ने और उसमें निहित सन्देश को आत्मसात करने के लिए प्रेरित करेगा। श्री पूनम सूरी जी ने उद्घाटन के बाद खचाखच भरे सभागार में "डी.ए.वी. के 128 स्वर्णिम वर्ष" विषय पर एक हृदय स्पर्शी उद्बोधन दिया। 'डी.ए.वी.' इस अभिव्यक्ति का मर्म समझाते हुए प्रधान जी के मुँह से डी.ए.वी की स्थापना विकास और उपलब्धियों के लम्बे इतिहास को सुनकर उपस्थित प्राध्यापक और युवा छात्र भाव विभोर हो गए। "The best is yet to come" कह कर श्री सूरी ने डी.ए.वी के भावी क्षितिज का खुलासा किया।

यज्ञशाला कॉलेज स्थित वैदिक शोध संस्थान परिसर में बनाई गई है जहाँ आर्य–वैदिक साहित्य से समृद्ध पुस्तकालय होने के साथ–साथ विद्यार्थियों के लिए योग प्रशिक्षण का कार्यक्रम भी संचालित किया जाता है, वैदिक साहित्य और शोध को समर्पित यह संस्थान इन दिनों कॉलेज में विविध गतिविधियों के केंद्र के रूप में सामने आया है। इन गतिविधियों के संचालन में।

डी ए वी कॉलेज फिरोज़पुर ने आर्य अनाथालय में यज्ञ तथा समाज सेवा शिविर का आयोजन किया

डीएवी कॉलेज फॉर वूमेन, फिरोजपुर कैंट की प्राचार्या डॉ. पुष्पिंदर वालिया के मार्गदर्शन में कॉलेज के एनएनएस विभाग की ओर से आर्य अनाथालय फिरोज़पुर में एक एनएनएस शिविर लगाया गया। इस शिविर शुभारम्भ अनाथालाय परिसर में स्थापित यज्ञशाला में हवन यज्ञ से किया गया। यज्ञ में मुख्य यजमान की भूमिका इंजी, डी पी एस खरबन्दा डिप्टी कमिश्नर फिरोज़पुर ने अदी की। प्राचार्य डॉ. पुषपेन्दर वालिया ने मुख्य अतिथि का अभिनन्दन किया। उन्होंने यज्ञशाला में उपस्थित आश्रम के बालक–बालिकाओं

को संबोधित करते हुए कहा कि आश्रम की यह भूमि बड़ी पावन है क्योंकि यहाँ पर स्वामी दयानन्द जी के चरण पड़े हैं और यह आश्रम डीएवी का एक बहुत ही प्यारा प्रोजेक्ट है। बच्चों को यज्ञ के महत्व के बारे मे बताते हुए उन्होंने कहा कि यज्ञ से तन, मन और आत्मा तृप्त होती है। अतः इसे अपने जीवन का एक शाश्वत् कर्म बनाएं। प्रि. डॉ. वालिया ने डिप्टी कमिश्नर श्री डीपीएस खरबन्दा से अपील की कि वे सरकार की ओर से प्रायोजित योजनाओं से आश्रम के बच्चों की साहयतार्थ सहयोग दें। मुख्य अतिथि ने बच्चों का उत्साहवर्धन किया। अपना पूर्ण सहयोग देने आश्वासन दिया। उन्होंने फल बांटे व उन्हें आत्मनिर्भर बनकर देश के श्रेष्ठ नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया। पं. सतीश शर्मा ने मुख्यातिथि का आभार व्यक्त किया। इस यज्ञ में पं. सतीश शर्मा, डॉ. के सी अरोड़ा, कॉलेज का स्टाफ व एनएसएस वालंटियरज़ शामिल हुए। कॉलेज की एनएसएस इकाई ने शिविर लगाया गया। यह शिविर 'जेनेसिस इंस्टीट्यूट ऑफ डेंटल सांइसिज़ एण्ड रिसर्च' के अध्यक्ष डॉ. कमल बागी के सौजन्य से लगाया गया और डॉ. ईशा व श्री गुरजीत घुम्मण, डॉ. अरविन्दर तथा डॉ. गुरलीन की टीम के सहयोग से सफलतापूर्ण सम्पन्न हुआ। कॉलेज के एनएसएस वालंटियरज़ ने आश्रम में जाकर श्रमदान किया। उन्होंने आश्रम की सफाई व सौंदर्यीकरण में सहयोग किया। इस प्रकार सुखद माहौल में यह शिविर सफलतापूर्ण सम्पन्न हुआ।

डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय अबोहर में यज्ञ से हुआ सत्र का शुभारम्भ हुआ

बी.एड. कक्षा में प्रवेश लेने वाले 2014–15 सत्र के विद्यार्थियों के स्वागत एवं उन्हें शुभाशीष देने हेतु डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय अबोहर के प्रांगण में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। मुख्य यजमान महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. (श्रीमती) विनीता सिंह जी थी। महाविद्यालय के समस्त स्टाफ, बी एड. व ई.टी.टी. के सभी विद्यार्थियों ने हवन यज्ञ में मन्त्रोच्चारण करके आहुतियां डाली।

इस अवसर पर स्थानीय समिति के सदस्य सर्व श्री देवमित्र जी आहूजा, श्री सोहन जी सेतिया, श्री बी.एल. सिक्का जी, डॉ सुशील रतन मिगलानी व डॉ. (श्रीमती) सरोज मिगलानी ने उपस्थित रह कर नए विद्यार्थियों को आशीर्वाद

दिया तथा भावी समय के लिए स्वास्थ्य हेतु जागरूक करने के लिए डॉ मिगलानी ने अपने विचार सांझे किये। महाविद्यालय के 2013–14 के सत्र के प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहने वाले विद्यार्थियों को प्राचार्य महोदया तथा अतिथिगणों द्वारा सम्मान चिन्ह प्रदान किए गए। गौरतलब है कि वर्षा भारती ने 83.8% अंक लेकर तृतीय स्थान प्राप्त किया। 80% से ऊपर अंक लेने वाले 8 विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी हासिल की है।

प्राचार्य महोदय डॉ. (श्रीमती) विनीता सिंह ने महाविद्यालय की प्राप्तियों का उल्लेख करते हुए इस सत्र में और अधिक कीर्त्तिमान स्थापित करने का आह्वान किया। समारोह के अंत में प्रसाद वितरित किया गया।

thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 28 सितम्बर, 2014 से 04 अक्तूबर, 2014

हे सोम! हृदय-कलश में प्रवेश करो

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पवस्य सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरिताति पारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।
ऋग् ९.७०.९

ऋषिः रेणुः वैश्वामित्रः। देवता पवमानः सोमः। छन्दः जगती।

● (सोम) हे सोम परमात्मन्! (तू), (वृषा) वर्षक (होता हुआ), (देववीतये) दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, (पवस्य) प्रवाहित हो, (इन्द्रस्य) आत्मा के, (हार्दि) हृदय–रूप, (सोमधानं) सोम–कलश में, (आविश) प्रविष्ट हो।, (बाधात्) बाधे जाने से, (पुरा) पहले, (नः) हमें, (दुरिता अति) पापचरणों से लंघाकर, (पारय) पार करदे। (क्षेत्रवित्) मार्ग का ज्ञाता, (विपृच्छते) विशेषरूप से पूछनेवाले के लिए, (दिशः) दिशाओं को, (आह हि) बताता ही है।

● हे रसागर सोम परमात्मन्! तुम 'वृषा' हो, रस की वर्षा करने वाले हो। तुम दिव्य गुणों के रस के साथ मेरे अन्दर प्रवाहित होवो। तुम आत्मा के हृदय–रूप सोम–कलश में आकर प्रविष्ट होवो। मेरा आत्मा न जाने कब से सोम–पान के लिए उत्कंठित हो रहा है, उस प्यासे की तृषा को दूर करो। तुम कामवर्षी हो, मेरी कामना को पूर्ण करो। तुम आनन्दवर्षी हो, मुझपर आनन्द की वर्षा करो।

कभी–कभी मेरा आत्मा 'दुरितों' से घिर जाता है। पाप–भावनाएँ उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं। पाप–कर्म उसे निगलने के लिए तैयार रहते हैं। आसपास का पापमय वातावरण उसे पाप–मार्ग पर चलने के लिए प्रलोभित करता है। ऐसे समय में हे मेरे सोम प्रभु! क्या तुम खड़े देखते ही रहोगे? क्या तुम मुझे 'दुरितों' से ग्रसा जाने दोगे? क्या तुम मुझे पाप–ताप के प्रहारों से छलनी हो जाने दोगे? क्या तुम मुझे दुराचार–रूप शत्रुओं से आक्रान्त हो जाने दोगे? नहीं, तुम मेरे उद्धारक होकर आओ। इससे पहले कि 'दुरित' मेरे आत्मा पर प्रभुत्व पायें, उसे पतनोन्मुख करें, तुम त्वरित गति से मेरे पास आ जाओ और मुझे उन दुरितों से लंघाकर पार कर दो। संसार का यह नियम है कि जो 'क्षेत्रवित्' है, मार्ग का ज्ञाता है, वह पूछने वाले को दिशा बताता ही है। तुमसे बढ़कर 'क्षेत्रवित्' बढ़कर मार्गज्ञ अन्य कौन है! अतः हे मेरे सोम प्रभु! मैं तो तुम्हीं से दिशा पूछता हूँ। मैं दिग्भ्रान्त हो रहा हूँ, तुम कुतुबनुमा यन्त्र की सुई बनकर मुझे दिशा दर्शाओ। यदि तुमसे दिशा–ज्ञान न मिला, तो मेरा जीवन–पोत भव–सागर में डूबकर नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा। हे प्रभु! मुझ भूले को सही राह दिखाओ, मुझ भटके को गन्तव्य लक्ष्य पर पहुँचाओ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

दो रास्ते

● महात्मा आनन्द स्वामी

आर्य समाज में आई शिथिलता की बात कर रहे थे स्वामी जी। सारी स्थिति बता कर कहा–ऐसी दशा में आर्य समाज कमज़ोर नहीं होगा तो और क्या होगा।

तुलना करते हुए स्वामी जी ने कहा कि सनातनधर्म से जुड़े आश्रम और मठ साधुओं, संन्यासियों, ब्रह्मचारियों और वानप्रस्थियों के लिए एक दो दिन नहीं वर्षों तक निवास और भोजन सुविधा प्रदान करते हैं। आर्य समाज के पास यह नहीं है।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का जय घोष लगाने से कार्य सिद्ध नहीं होगा। महर्षि दयानन्द ने रोशनी का एक प्रकाश स्तम्भ पैदा किया था उसे बुझने से बचाना है। यह विष्णु बने बिना नहीं होगा। विष्णु के हाथ में 'चक्र' है न जो, वह हमें तेज़ी से आगे बढ़ने का संदेश देता है। उनकी गदा क्षात्रशक्ति और बल का प्रतीक है। देश की रक्षा के लिए बलवान्, दृढ़, स्वस्थ और हृष्टपुष्ट क्षत्रियों की आवश्यकता है।

याद रखो इस दुनिया में निर्बल जाति के लिए और निर्बल राष्ट्र के लिए कोई स्थान नहीं।

स्वामी जी ने बताया कि महाभारत और उससे पहले पैदा होते ही बच्चे को शिक्षा दी जाती थी–

अश्माभव, परशुर्भव, हिरण्यमस्तृतं भव।

पत्थर बन, कुल्हाड़ा बन और अब आगे....

परशुर्भव!

केवल चट्टान नहीं बल्कि कुल्हाड़ा बन। छुरी खरबूजे पर गिरे तो खरबूजा कट जाय, खरबूजा छुरी पर गिरे तो भी खरबूजा ही कटे, छुरी नहीं–ऐसा बन कि तू किसी पर आक्रमण करे तो उसके टुकड़े–टुकड़े हो जाए, तुझपर कोई आक्रमण करे तो भी वह टुकड़े–टुकड़े हो जाए।

और उसके बाद–

हिरण्यमस्तृतं भव!

सोने की तरह चमक मेरे बेटे! यह दुनिया उनके लिए है जो चमकते हैं, आगे बढ़ते हैं, उन्नति करते हैं। उनके लिए नहीं, जो माटी के ढेले की तरह पड़े रहते हैं और जिन्हें रौंदकर दूसरे आगे बढ़ जाते हैं।

ये विचार दिए जाते थे बच्चे को! ऐसे विचार जो देवव्रत जैसे बालक को पत्थर नहीं, लोहा बना देते थे। यही देवव्रत जब भीष्म बने और फिर भीष्मपितामह बने और 'महाभारत' के युद्ध में कौरवों की सेना के पहले सेनापति बने तो उन्हीं के बताए तरीके से अर्जुन ने उन्हें अपने तीरों से छलनी कर दिया, शरीर का हर अंग तीरों से छिद गया, तीरों की शूलों से बनाई गई सेज पर वह लेट गए, हँसते हुए उन्होंने कहा– ''इतने तीर लगने पर भी मैं मरूँगा नहीं। सूर्य इस समय पूर्व के दक्षिण भाग से निकलता है, जब तक वह उत्तरी भाग से निकलना आरम्भ न करे तब तक मैं जीवित रहूँगा''। मृत्यु पर भी विजय पाना, उसे भी आज्ञा देना कि–''जब मैं चाहूँ तब आओ।'' यह बल उस मनुष्य में आता है जिसने अपने–आप को दृढ़ तथा बलवान् बनाया है।

इसके बाद भगवान विष्णु के चौथे हाथ में है– 'पद्म'। पद्म का अर्थ है कमल का फूल, जिसके ऊपर स्वयं लक्ष्मी निवास करती है परन्तु जो कभी जल में डूबता नहीं। तब उस 'पद्म' या कमल फूल को भगवान् विष्णु के चौथे हाथ में देने का अर्थ क्या है? यह कि धन कमाओ जरूर, परन्तु धन के अन्दर डूब न जाओ। तुम धन के लिए नहीं हो, धन तुम्हारे लिए है।

आज लोग धन इस प्रकार कमाते हैं जैसे धन कमाना ही जीवन का ध्येय, जीवन का उद्देश्य, मनुष्य का परम लक्ष्य हो। स्वास्थ्य बिगड़ता है तो बिगड़ जाए। आचार का सत्यानाश होता है तो हो, समाज में फूट पड़ती है तो पड़े, साम्प्रदायिकता के कारण भाषा और प्रांतीयता के शोलों

thearyasamaj.org

से आग लगती है तो लगे, देश से गद्दारी करनी पड़ती है तो करो। ब्लैक मार्केट से, रिश्वतखोरी से, किसी भी तरीके से धन कमाओ, बस, यही एक लक्ष्य रह गया है जीवन का। यह नक्सलवादी और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट, जो चीन से धन और हथियार लेते हैं, धन के लिए देश में विनाश जगाने का यत्न कर रहे हैं। जो लोग राज कर रहे हैं, वे भी गलत रास्ते पर चले जाते हैं। उन्होंने भी धन को ही सब–कुछ समझ लिया है। धन के लिए आज एक बात कहते हैं, कल दूसरी।

परन्तु यह तो भगवान् विष्णु की तरह काम करने का ढँग नहीं है। भगवान विष्णु की तरह काम करने का ढंग यह है कि धन के संबंध में उस 'पद्म' की तरह रहो जो रहता पानी में है परन्तु पानी में डूबता नहीं। पानी जितना ऊपर उठता है, 'पद्म' भी उतना ऊपर उठ जाता है।

भगवान विष्णु के 'शंख', 'चक्र', 'गदा' और 'पद्म' के संबंध में ये चार बातें मैंने 'पेरी मेरी बो' के विष्णु मन्दिर में बैठे भाइयों और बहनों को सुनाईं तो सब लोगों ने कहा– ''अब हम समझे हैं विष्णु का अर्थ।''

मैंने हँसते हुए कहा– ''नहीं! अभी नहीं समझे आप। अभी आपने केवल बाहर की बात सुनी है– इस मूर्ति के हाथों में पकड़े शंख, चक्र, गदा, पद्म की। अब अन्दर की बात सुनो, यह सुनो कि विष्णु बनने की विधि क्या है–

विज्ञानसारथिर्यस्तु, मनः प्रग्रहवान्नरः।
सोऽध्वनः पारमाप्नोति तद्विष्णोः परमं पदम्।।

'जिसने विज्ञान को अपना सारथि बना लिया है, जिसका मन सोच–समझवाला, बुद्धिवाला, ज्ञानवाला है, वह मनुष्य बहुत जल्द ही विष्णु के उस परम पद को प्राप्त कर लेता है।''

परन्तु कहाँ प्राप्त कर लेता है? ध्यानावस्था के अन्दर जाकर। आज दुनिया में विज्ञान की बहुत चर्चा है। अमेरिका में विज्ञान बहुत आगे बढ़ा है। अमेरिका में अंतरिक्ष–यात्री दो बार चाँद तक हो आए; तीसरी बार नहीं पहुँच सके तो अभिमान के कारण। मैं जब अमेरिका में था तो डलास, शिकागो और कई दूसरी यूनिवर्सिटियों में मैंने विज्ञान के विद्यार्थियों और विज्ञानवेत्ताओं के सामने भाषण दिए और बार–बार कहा, देखो तुमने विज्ञान में उन्नति की है अवश्य परन्तु अभिमान में ने आओ, इतनी उन्नति के पश्चात् भी अभी शैशव अवस्था में है। भगवान्! राम लंका से अयोध्या में आए तो रामायण कहती है कि उनके पुष्पक नामक के वायुयान में उनके अतिरिक्त उनकी पूरी सेना थी और यह सेना दस, बीस, या दो–चार सौ मनुष्यों की तो नहीं थी, हजारों लोग थे उसमें, हजारों योद्धा, सैकड़ों सेनापति। क्या तुम्हारे पास ऐसा वायुयान है जिसमें एक–साथ दस बारह या पन्द्रह हजार आदमी बैठ सकें?

और फिर यह त्रेता युग की बात है, लाखों वर्ष पहले की बात। आज से केवल पाँच हजार वर्ष पहले की, महाभारत की बात सुनो! महाभारत में एक राजा का वर्णन आता है जिसका नाम 'शांसू' था। उस राजा की पूरी राधानी उड़ती फिरती– आज यहाँ, कल वहाँ, क्योंकि यह राजधानी एक वायुयान में थी। इस वायुयान में बाजार थे, दुकानें थीं, होटल थे, सिनेमाघर और थियेटर भी; नहाने के तालाब खेलने के मैदान, अस्पताल, अदालतें, कचहरियाँ कार्यालय भी। राजा का दरबार इसी में लगता था। राजा के मन्त्री इसी में रहते थे, फौज रहती थी, पुलिस रहती थी। और यह राजधानी भूमि, जल और अन्तरिक्ष, सब जगह चल सकती थी– भूमि पर एक बहुत बड़ी गाड़ी की तरह, पानी में एक बहुत बड़े समुद्री पोत की तरह, हवा में एक बहुत बड़े वायुयान की तरह। क्या ऐसी कोई राजधानी तुम्हारे पास है– उड़ती हुई, तैरती हुई, चलती हुई? फिर तुम्हारा विज्ञान शैशव–अवस्था में नहीं तो क्या है?

'शांसू' राजा के उस वायुयान, पृथिवीयान, और जलयान का नाम था– 'सौभ'। इसे सौभानगर भी कहते थे। इस आफत जैसी राजधानी को लेकर शांसू ने भगवान श्री कृष्ण की राजधानी द्वारिका पर आक्रमण किया, तो भगवान् श्री कृष्ण ने अपने साथियों से कहा– हवा में इसका मुकाबला न करो, इसे नीचे समुद्र में उतरने दो, वहीं में इसे नष्ट करूँगा। शांसू जब यह समझकर कि द्वारिका वालों ने हार मान ली है, द्वारका के सामने समुद्र में उतरा तो भगवान कृष्ण ने उसकी उड़ती, चलती, तैरती राजधानी को नष्ट भ्रष्ट कर दिया।

ऐसे ही महाभारत में 'पाशुपत अस्त्र' का भी वर्णन आता है। भगवान् कृष्ण ने जब देखा कि युद्ध अनिवार्य है तो अर्जुन को भगवान् शिव के पास भेजा कि उनसे 'पाशुपत अस्त्र' लेकर आए, उसको चलाने की विधि भी सीखकर आए। अर्जुन वहाँ गया। भगवान शिव ने अर्जुन की योग्यता तथा सहनशक्ति को परखने के लिए उसको युद्ध के लिए ललकारा। बहुत भयानक युद्ध हुआ दोनों के बीच। अन्त में अर्जुन को पता लगा कि जिनके साथ वह लड़ रहा है वही भगवान् शिव हैं, वह गुरु, जिनसे वह सीखने आया है तो वह उनके चरणों में झुक गया; बोला – मैं नहीं जानता था कि आप ही वह महादेव है जिनसे मैं पाशुपत अस्त्र लेने आया हूँ। अनजाने में मुझसे अपराध हुआ। आप दण्ड दीजिए, मैं स्वीकार करूँगा।'' भगवान् शिव ने उसे उठाकर अपने सीने से लगा लिया; बोले– तुमसे कोई अपराध नहीं हुआ। मैं तुम्हारी योग्यता और सहनशक्ति की परीक्षा ले रहा था। आओ। मैं तुम्हें वह पाशुपत–अस्त्र देता हूँ, जो पल–भर में लाखों–करोड़ों लोगों को नष्ट कर सकता है। इसे चलाने और प्रयोग करने का ढंग भी सिखाऊँगा, इसे वापस बुलाने का भी। परन्तु एक बात याद रखो, यह अस्त्र केवल राक्षसों का या रक्षस–वृत्तिवाले लोगों का नाश करने के लिए है। अच्छे लोगों और धर्म के मार्ग पर चलने वालों का नाश करने के लिए नहीं।''

ऐसे ही श्री द्रोणाचार्य के 'नारायण अस्त्र' का भी वर्णन आता है। यह अस्त्र जब चलता था तो सभी हथियार बेकार हो जाते थे। और इसके विपरीत चलाए गए हथियार, चलाने वालों को नष्ट करने लगते थे। भगवान् कृष्ण ने इस अस्त्र को महाभारत के युद्ध में चलते देखा तो पांडवों की सवारी सेना को आज्ञा दी, ''अपने हथियार फैंक दो, सिर झुका दो! यही इस हथियार को व्यर्थ करने का उपाय है।''

मैं पूछता हूँ कि आज के विज्ञान के पास सौभ जैसे यान हैं जिनमें पूरा नगर आबाद हो सके और जो जल, स्थल और हवा में तेजी से आगे बढ़ सकें? क्या कोई 'पाशुपत अस्त्र' है जिससे पल भर में करोड़ों लोगों का नाश हो सके और जिसे अपनी इच्छा से वापस भी बुलाया जा सके? क्या 'नारायण अस्त्र' जैसा भी कोई हथियार है जिसके विरुद्ध चलाए जाने वाले सभी हथियार चलाने वालों को ही नष्ट करने लगे? नहीं हैं ऐसे हथियार, तब यह अभिमान किसलिए कि वर्तमान विज्ञान ने बहु उन्नति की है?

ये सब बातें मैंने अमेरिका वालों को सुनाईं। उन्हें कहा कि तुम्हारा विज्ञान अभी शैशव में है, इसपर अभिमान न करो!

कुछ लोग कहेंगे कि महाभारत में लिखी गई ये सब बातें केवल गप्प हैं।

मैं कहता हूँ कि यह गप्प नहीं है यह सच्चाई है। यह क्या हठ है कि हम जो बात कहें उसे गप्प कह टाल दिया जाय, और आप जो बात कहें उसे सच्चाई मान लिया जाए?

परन्तु पहले का विज्ञान अधिक बड़ा था। एक बात तो बिल्कुल प्रकट है कि विज्ञान से लाभ उस समय होता है, जब वह मन के काबू में रहे, मन का सारथि बने, आगे बढ़े परन्तु मन की इच्छानुसार, अपनी इच्छा से नहीं, बेलगाम होकर नहीं। बेलगाम होकर बढ़े तो वैसे ही विनाश होता है जैसे महाभारत में हुआ और जैसा अब हमारे सामने है।

इसलिए मेरी माँ! मेरे भाई! विज्ञान को अपना सारथि बनाओ। परन्तु विज्ञान का अर्थ कवेल भौतिक विज्ञान नहीं। इसका वास्तविक अर्थ है–

''सम्यक् ज्ञान''

पूरा ज्ञान, और पूरा ज्ञान है आत्मा का ज्ञान, क्योंकि सदा रहने–वाला आत्मा है। प्रकृति की बनी हुई वस्तुएँ तो सदा रहती नहीं, प्रकृति सदा रहती है। वस्तु का रूप बदला और वह समाप्त। इसलिए विज्ञान का वास्तविक अर्थ है– आत्मिक ज्ञान, आत्मिक विष्णु, यह ज्ञान कि मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? क्यों आया हूँ? कहाँ जाना है? किस प्रकार जाना है? मेरा लक्ष्य क्या है? उसे कैसे प्राप्त करना है? मैं शरीर तो नहीं हूँ मेरे भाई, मैं तो आत्मा हूँ। और यदि मैंने यह ही नहीं जाना कि मैं हूँ क्या, तो बाकी बात बनेगी कैसे? इसलिए कहा–

'प्रग्रहवान् नरः'

'नर' को प्रज्ञावाला, ज्ञानवाला अर्थात् आत्मिक ज्ञानवाला होना चाहिए। और 'नर' किसे कहते हैं–

'न रम्यते इति नरः'

'जो इन्द्रियों में रमण नहीं करता, इन्द्रियों में खो नहीं गया, जो इन्द्रियों के काबू (वश) में नहीं बल्कि इन्द्रियाँ जिसके काबू में हैं वह 'नर' है, वह मर्द है।' यदि ऐसा नहीं तो यह आदिमी मर्द तो है नहीं, और कुछ भले ही हो। मैं जानता हूँ कि ये इन्द्रियाँ बलवान् हैं। थोड़ी देर के लिए भी आप असावधान हुए नहीं कि उन्होंने विजय पाई नहीं। जिह्वा कहती है– रसगुल्ले खाऊँगी, इमली की चटनी खाऊँगी, गोलगप्ले खाऊँगी और दही–बड़े भी, और आम–पापड़ भी, और मिर्चोंवाला अचार भी, और पता नहीं क्या कुछ। आँख कहती है– सुन्दर रूप देखना है, सुन्दर दृश्य देखने हैं, सिनेमा देखना है, थियेटर देखना है, ताज देखना है। भागते फिरो इनके पीछे, ये कहीं चैन नहीं लेने देंगी। कान कहता है– मंगेशलता का गाना सुनना है।

(किसी ने कहा, ''मंगेशलता नहीं स्वामी जी! उसका नाम लता मंगेश्कर है।'' स्वामी जी हँसते हुए बोले)

यही नाम होगा भाई! लता मंगेशकर। उसका गाना सुनना है, अब्दुर्रहमान का सुनना है।

(किसी ने फिर कहा, ''अब्दुर्रहमान नहीं स्वामी जी, मुहम्मद रफी।'' स्वामी जी जारे से हँस उठे; बोले)

अरे भाई! कोई अब्दुर्रहमान भी तो गाता होगा। मेरा तात्पर्य तो कान और गीता से है। यह का कभी कहीं लिए घूमेगा, कभी कहीं। और फिर यह शरीर......... यह कहेगा, इसे डनलप–पिलो चाहिए, इसे सर्दियों में हीटर चाहिए, गर्मियों में ठण्डी हवा देने वाली मशीन चाहिए। इनके पीछे चलने वाले को 'नर' नहीं कहते, दास कहते हैं। 'नर' बनना हो तो आत्मिक ज्ञान को प्राप्त करना होगा, इन्द्रियों को वश में करना होगा, और जब यह सब कुछ होगा। तब–

शेष अगले अंक में....

thearyasamaj.org

कर्मफल सिद्धान्त कुछ अनसुलझे प्रश्न

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

आजकल सभी चैनलों पर कश्मीर में जल–प्लावन प्रलय के भयंकर दृश्य दिखाए जा रहे हैं। मैं भी देख रहा हूँ। तीनों सेनाओं की सम्मिलित टुकड़ियों के प्रयास से हजारों लोगों को प्रतिदिन बचाया जा रहा है। समाचार केवल श्रीनगर और जम्मू के आ रहे हैं। बाकी के लिए कहा जा रहा है कि1 220 ग्रामों से 450 ग्राम बिल्कुल नेस्तनाबूद हो गए हैं। उनका अस्तित्व ही मिट गया है। जन–धन की हानि का आकलन करने का अभी समय नहीं है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वायुयान द्वारा स्थिति का आंकलन किया और एक हजार करोड़ की सहायता राशि की घोषणा की। कोई खबर नहीं है कि इस घोषणा से पूर्व उन्होंने केबिनेट की मीटिंग बुलाई अथवा नहीं। रक्षामंत्री श्री अरुण जेटली मुम्बई में अस्पताल में भर्ती थे। प्रधानमंत्री जी ने सशस्त्र सेनाओं को तत्काल राहत कार्यवाही करने का आदेश दिया और बिना समय खोए सेना इस काम में जुट गई। श्री मोदीजी के काम करने का तरीका तो अब समकी समझ में आ गया होगा। विपक्ष को भी समझ में आ गया। खैर, राजनीति से मुझे क्या लेना देना।

रात तीन बजे नींद खुल गई। घड़ी में समय भी देखा। सोचा सो जाऊँ। अभी क्या करूँगा। मस्तिष्क सक्रिय हो चुका था बाढ़ से निकाली गई 10–12 साल की लडकी से टी.वी. संवाददाता ने पूछा– तुमने क्या देखा? उसने कहा– लाशों के ढेर बहे जा रहे थे और पीड़ा से उसकी मुख मुद्रा बिल्कुल बदल गई। अन्य लोगों ने बताया कि उन्होंने अपने बच्चों को जलप्रवाह में बहते देखा है। अनेक शव पेड़ों पर लटके हुए हैं। बचावकार्य दिनरात चल रहा है। 11 सितम्बर 2014 तक सेना द्वारा 1 लाख 10 हजार मनुष्यों का जीवन बचाया जा सका है। छह लाख अभी बाढ़ में फँसे हुए हैं।

त्रासदी के दो पक्ष हैं। एक तो वे जिन्हें जल समाधि मिल गई। दूसरे वे जो बच गये। जम्मू कश्मीर की मूल आबादी के अतिरिक्त देश–विदेश से आए हजारों पर्यटक भी हैं। जिनके परिवार, समाचार, हाल–चाल जानने को उत्सुक हैं। और संचार व्यवस्था ठप्प हो जाने से समाचार भी नहीं मिल रहे हैं। उनकी भी भूख–प्यास, नींद भी गायब हो गई है।

सम्पूर्ण क्षेत्र में 15 से 20 फुट तक पानी भरा है। दो तीन मंजिल मकानों की छतों पर ही सात दिन से भूखे प्यासे हैलीकाफ्टर द्वारा लिफ्ट करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस कष्ट का अनुमान तभी हो सकता है जब दिनों को घंटों और घंटों को मिनटों में, सैकंडों में परिवर्तित किया जाए और उनके कष्ट की अनुभूति की जावे। इस पूरी अकल्पित, अयाचित प्राकृतिक त्रासदी पर मेरा कष्ट कुछ अलग है। सितम्बर 2012 में मैंने एक लेख ''कर्मफल सिद्धान्त'' एक अलग दृष्टिकोण'' लिखा था जिसे आठ पत्र–पत्रिकाओं ने प्रकाशित किया था। अब वह मेरी पुस्तक ''ऋषि अपर्ण'' का अंश है। परोपकारी (अजमेर) को मैंने यह लेख प्रेषित नहीं किया था लेकिन परोपकारी के दिसम्बर 2012 के प्रथम अंक में आचार्य सत्यजीत ने उसकी बखिया उधेड़ी थी।

उसको पढ़कर आर्य–जगत के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान ने मुझे पत्र द्वारा सूचित किया कि आचार्य जी की काट बिल्कुल सतही है। इंटरनेट पर आचार्य सत्यजीत का इस विषय पर संक्षिप्त प्रवचन हुआ। उससे आचार्यजी की सोच का और पता चला। आचार्य जी कहते हैं कि किसी अपराध की शासन द्वारा दी गई सजा अपार्यप्त है तो ईश्वर जितनी सजा आवश्यक समझता है वह स्वयं सजा देकर पूर्ति करता है। आचार्य सत्यजीत के लेख का मैंने उत्तर प्रषित किया था जिसको परोपकारी ने मई 2013 (प्रथम) में प्रकाशित किया। आचार्य जी ने शास्त्रीय भाषा में मुझे उलछाना चाहा था। फिर उनका अलग से पत्र आया था कि परोपकारी के जिज्ञासा समाधान ''कॉलम में अब वह नहीं लिख रहे हैं।

आठ पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होने पर भी आर्यजगत् के किसी विद्वान और संन्यासी ने कोई अभिमत नहीं किया। संभवतः उनके लिए वेद में जो भी लिखा है वह अंतिम प्रमाण है। उसकी आलोचना नहीं हो सकती। उस पर विवाद नहीं हो सकता। ठीक है। विचार तो किया ही जा सकता है। विचार करने का ही मेरा आग्रह था। महर्षि ने भी बुद्धि के धरातल पर तोलकर ही तो कोई बात स्वीकार करने का आदेश दिया है।

आठ पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होने पर भी आर्यजगत् के किसी विद्वान और संन्यासी ने कोई अभिमत नहीं किया। संभवतः उनके लिए वेद में जो भी लिखा है वह अंतिम प्रमाण है। उसकी आलोचना नहीं हो सकती। उस पर विवाद नहीं हो सकता। ठीक है। विचार तो किया ही जा सकता है। विचार करने का ही मेरा आग्रह था। महर्षि ने भी बुद्धि के धरातल पर तोलकर ही तो कोई बात स्वीकार करने का आदेश दिया है।

मैंने उस लेख में कर्मफल सिद्धान्त के प्रश्न के संबंध में अनेक जिज्ञासाएँ प्रस्तुत की है। उनकी पुनरावृत्ति इस लेख में नहीं करूँगा। केवल एक पक्ष को उजागर कर विद्वतजनों एवं संन्यासियों से वेद सम्मत समाधान की अपेक्षा रखता हूँ।

वैदिक धर्मी तीन अनादि सत्ताएँ मानते हैं। ईश्वर, जीव और प्रकृति। ईश्वर और जीव की चार्चाएँ वेद में, उपनिषद् एवं अन्य ग्रन्थों में बहुत हैं । प्रकृति भी अनादि सत्ता है। ईश्वर उसका उपयोग सृष्टि निर्माण कार्य में करता है। जीव उसका उपभोग करता है। ऐसी स्थिति में जीवन का प्रकृति द्वारा लालन पालन और विनाश भी होता है।

जन्म और मृत्यु, पाप और पुण्य की आवधारणा से जुड़ी हुई है। जन्म पर विचार करें तो विकासशील देशों–एशिया व अफ्रीका के देशों में जन्म संख्या जैट स्पीड से बढ़ रही है। महर्षि दयानन्द के समय भारत की जन्मसंख्या 20 करोड़ थी और आज 120 करोड़ से ज्यादा है। वैदिक धर्मियों के पास भी इस जनसंख्या वृद्धि का वेद प्रमाणित काई उत्तर नहीं है और है तो मैं जानना चाहूँगा।

कश्मीर की महाप्रलय ने प्राकृतिक की विनाशकारी शक्ति का विकराल स्वरूप दिखाया है। कश्मीर समतल प्रदेश नहीं है और यदि वहाँ बाढ का पानी बीस फीट की ऊँचाई पर बह रहा है तो कल्पना कीजिए वहाँ बचा ही क्या होगा? जन–धन, पशु–धन मकान–पेड़ सबको बहा ले गया प्रवाह।

बताइये, इस भारी मानव विनाश की संगति कर्मफल सिद्धान्त में कैसे बिठाएँगे? यही बात संदर्भित लेख में उत्तराखंड जल प्रलय के, सुनामी आपदाओं के विषय में मैंने उठाई थी। उत्तराखंड में लाशें अभी कुछ समय पूर्व तक निकाली जा रहीं थीं ये सब 'मृत्यु' ईश्वरीय कर्मफल व्यवस्था के अन्तर्गत हुई। मुझे मानने में बहुत संकोच है, आपत्ति है।

जल प्रलय के पश्चात् प्राकृतिक आपदाओं में वायरस–रोगाणु जन्य बीमारियों से हजारों मानव काल–कवलित हो जाते हैं। पहले मलेरिया, फिर टी.बी. (तपेदिक) और अब डेंगू मेननजाइटिस, एनसेफिलाईट्स, चिकनगुनियाँ, कैंसर और अभी पिछले एक दो महीनों से एबलो महामारी/बीमारी का नाम सुना जा रहा है। मानव द्वारा इतनी पीड़ा, यातना को भी क्या कर्मफल सिद्धान्त की परिधि में लाया जा सकता है? क्या इनके द्वारा ईश्वर पीड़ा व मृत्यु देने के नए–नए औजारों का निर्माण करता है।

आर्य संन्यासियों व विद्वानों से आग्रह है कि इस लेख का पता चलने पर अपने विचारों से आर्य जनता को लाभान्वित कराएँ। मौन न रहें। मैं निवेदन कर रहा हूँ कि आर्यजगत् व इतर की पत्र पत्रिकाओं के संपादकों से नाचीज लेखक को पर्याप्त प्रोत्साहन मिल रहा है। यह लेख विद्वानों व संन्यासियों से समाधान की अपेक्षा रखता है।

22 जीवाजीगंज
लश्कर, ग्वालियर–474001 (म.प्र.

अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह

मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान श्री सोमदेव शास्त्री से प्राप्त पत्र के अनुसार मानव सेवा प्रतिष्ठान के तत्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष विभिन्न गुरुकुलों, विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों के छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करने तथा वैदिक धर्म एवं आर्य समाज के प्रचार प्रसारार्थ जीवनदानी विद्वान, विदुषियों एवं सामाजिक कार्यकताओं का अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान समारोह का आयोजन 12 अक्टूबर 2014 को प्रातः 8 बजे से दोपहर 1 बजे तक गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में आयोजित किया जा रहा है।

thearyasamaj.org

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका–हम पर जो अन्याय हुआ, किसी की भी वजह से हमको जो नुकसान उठाना पड़ा तो जो हमारा नुकसान हुआ, उसका क्या हुआ?

समाधान उत्तर है:–

• जिसने हम पर अन्याय किया, चाहे माता की भूल से हुआ, चाहे पिता की भूल से हुआ, चाहे गुरु, टीचर, पड़ोसी कोई भी, चोर–डाकू आदि ने जितना दुःख हमको दिया, उतना उसका अपराध है। उस अपराध का उसको दंड मिलेगा।

• अन्याय का दण्ड चाहे समाज दे, राजा दे, सरकार दे, ईश्वर दे, जो भी दे, कोई न कोई उसको दंड देगा। अपराध का दंड समाज ने नहीं दिया, राजा ने नहीं दिया तो अंत में ईश्वर जरूर देगा। कोई दूसरा हम पर अन्याय करेगा तो ईश्वर उसको दण्ड देगा। अन्यायकारी को दंड मिलेगा।

• दूसरी बात, जिस पर अन्याय हुआ, जिसका नुकसान हुआ, उसको कम्पन्सेशन (क्षतिपूर्ति) मिलेगा। उसके नुकसान की पूर्ति ईश्वर कर देगा। सरकार न्याय कर सकती है तो ठीक है, नहीं कर सकती, तो अंत में ईश्वर करेगा। इस प्रकार कम्पन्सेशन की गारंटी तो है, लेकिन वो भी पूरी सुरक्षा तो नहीं है न। एक बार तो मार खानी पड़ी न।

• पूरी तरह से सुरक्षा केवल मोक्ष में है। वहाँ पर कोई व्यक्ति हम पर आक्रमण कर ही नहीं सकता। अगर आपको ऐसा ठीक समझ में आता हो कहीं काई हमारा नुकसान कर ही नहीं पाए तो फिर 'मोक्ष' की तैयारी करो।

• मेरी समझ में खूब अच्छी तरह आ गया है कि यहाँ संसार में कहीं भी पूरी सुरक्षा नहीं है। इसलिए मैं तो मोक्ष में जा रहा हूँ। आपको आना है तो आ जाओ। साथ–साथ करो तैयारी, पीछे–पीछे आप भी चले आओ।

• मै अकेला मोक्ष में नहीं जाना चाहता। जो अकेला मोक्ष में जाना चाहता है, वह स्वार्थी है। ऐसे स्वार्थी व्यक्ति को ईश्वर मोक्ष देता भी नहीं। मोक्ष प्राप्ति के लिए निःस्वार्थ भाव से परोपकार करना चाहिए। इसलिए मैं परोपकार करता हूँ, और आप जैसे अनेक लोगों को मोक्ष में ले जाना चाहता हूँ। आप भी तैयारी करो

शंका– पुर्नजन्म के सिद्धान्तों के व्यवहारिक प्रमाण क्या है?

समाधान–

बहुत छोटे–छोटे तीन प्रश्नों का आपको उत्तर देना है।

• **पहला प्रश्न–** न्याय किसे कहते है? कर्म पहले किया जाए और फल बाद में दिया जाए, या न्याय है, या फल पहले दिया जाए और कर्म बाद मे किया जाए, यह न्याय है?

पहला उत्तर जो आपने दिया अर्थात् न्याय है– कर्म पहले, फल बाद में। आप अपना यह उत्तर याद रखिएगा।

• **दूसरी बात–** आपको इस समय जो मनुष्य शरीर मिला है, जिस शरीर में आप–हम बैठे हैं, यह कर्मों का फल मिला है या मुफ्त में मिला है?

आपने बोला ''मनुष्य शरीर मिलना कर्मों का फल है।'' चलिए, आपके दो उत्तर हो गए। ये दोनों उत्तर आपके बिल्कुल सही हैं। इन दोनों को याद रखिएगा।

• इन दो बातों का आधार पर एक तीसरा प्रश्न और है, इसका उत्तर और सोचिए। अब तीसरी प्रश्न यह है कि,

जिन कर्मों का फल आपको यह शरीर मिला है, वे कर्म आपने इस जन्म में तो नहीं किए कब किये थे?

आपने बोला– पिछले जन्म में। और फल मिला अब इस जन्म में। तो इससे पूर्नजन्म सिद्ध हो गया कि नहीं हो गया? यह व्यवाहारिक प्रमाण है। इससे बड़ा और क्या प्रमाण चहिए। अपने तीन बातें स्वयं अपने मुंह से बोली। मैंने तो एक भी नहीं बोली, मैंने तो सिर्फ प्रश्न किए, उत्तर आपने दिए। तीन बातों में सारी बात सुलझ गई कि, पुर्न्जन्म होता है।

यहाँ पर एक व्यक्ति ने प्रश्न किया– कुछ बच्चे अपने पूर्वजन्म की बातें बताते हैं। क्या वह सही है? मेरा उत्तर – आपने पूछा कि 'कुछ बच्चे बताते हैं कि पिछले जन्म में मैं जयपुर में था, आर्दश नगर में था 41 नंबर के मकान में था। यह एक अलग प्रश्न है। पुर्नजन्म होता है यह तो सिद्ध हो चुका है।

अब रही बात यह कि – पिछले जन्म की बात याद आती है, या नहीं? इस विषय में 'सत्यार्थ प्रकाश' के नौवें समुल्लास में लिखा है कि '' कोई पिछले जन्म की बाद याद करना भी चाहें, तो भी नहीं कर सकता।'' सत्यार्थ प्रकाश में इतना भी साफ लिखा है कि, यह भगवान की बड़ी अच्छी व्यवस्था है कि हम पिछले जन्म की बातें भूल जाते हैं, इसलिए जी रहे हैं।

एक ही जन्म में आदमी इतना परेशान है कि यह दुःखी होकर आत्महत्या कर लेता है। और अगर व्यक्ति को पिछले 10–20 जन्मों के दुःख और आद आ जाएं, तो बताओ वे कैसे जीएगा? वह तो पिछले जन्म के दुःखों को देख–देख के वैसे ही मर जाएगा।

जापान में एक व्यक्ति ने एक पुस्तक लिखी–''हाउ टु सुसाइड ईजिली'' अर्थात् ''आसानी से आत्महत्या कैसे करें।''उस लेखक से पूछा गया–''क्या आप जनता को आत्महत्या की प्रेरणा देना चाहते हैं?'' लेखक ने उत्तर दिया–''मेरे पड़ोस में एक व्यक्ति अपने जीवन से दुःखी हो गया। उसको अपनी समस्याओं का कोई समाधान नहीं सूझा। अन्त में उसने सोचा, ऐसे जीवन से तो मृत्यु अच्छी। यह सोचकर उसने आत्महत्या कर ली। पड़ोस का मामला था। सूचना मिलने पर मैं उसके घर गया। उसकी लाश देखी। बेचारे की 12 घंटे तक जान ही नहीं निकली। क्योंकि बहुत गतल तरीके से उसने मरने की कोशिश की थी। उसे पता नहीं था कि इस तरीके से मरने पर उसे 12 घंटे तक तडपना पड़ेगा। बेचारे को मरने में बहुत कष्ट भोगना पड़ा।''

थोड़ा रुक कर वह बोला–''कुछ दिनों बाद एक और पड़ोसी ने आत्महत्या की। वह भी 10 घंटे तक तड़पा। ऐसे कुछ–कुछ दिनों बाद मुझे 15–20 घटनाओं को देखने का अवसर मिला। सभी मरनेवालें घंटो तक मरने से पहले तड़पते रहे। उन घटनाओं को देखने से मेरे मन में यह पुस्तक लिखने का विचार आया। इस पुस्तक को लिखने का मेरा उद्देश्य यह नहीं लोग मेरी पुस्तक पढ़कर आत्महत्या करें। बल्कि मैंने यह पुस्तक उन लोगों के लिए लिखी है, जिन्हें अपनी समस्याओं का कोई समाधान नहीं मिलता। जो मरने का अन्तिम निर्णय कर चुके हैं। उन लोगों को मै कहना चाहता हूँ कि यदि उन्हें मरना ही है, तो वे आसानी से मरें। तड़प–पड़पकर, कष्ट भोग कर न मरें।''

इसलिए मैं कहता हूँ कि पिछले जन्मों को याद न करें, तो अच्छा है। अन्यथा लोग या तो आत्महत्या करेंगे या दूसरों को मारेंगे।

योग–दर्शन महाविद्यालय
रोजड़ वन (गुजरात)

सी.एल. अग्रवाल डी.ए.वी. चण्डीगढ़ में हुआ भजन-संध्या का आयोजन

सी.एल अग्रवाल डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, सैक्टर 7 चण्डीगढ़ में भजन संध्या का आयोजन विद्यालय के प्रागंण में करवाया गया। श्रद्धेय आचार्य श्री उपेन्द्र आर्य जी ने अपने ज्ञान भंडार से भक्तिरस की कुछ बूँदें अपने भजनों के माध्यम से बिखेरकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। ऐसे कार्यक्रम हम सब की आस्था एवं कर्म को प्रभावित करते हैं। परिसर में छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों व सब अतिथिगण ने बड़े हर्षोल्लास से भजनों का आनंद लिया।

निर्धारित कार्यक्रम डा.वी.सी. जोसन, प्रिंसिपल डी.ए.वी. कॉलेज सैक्टर 10 की अध्यक्षता में करवाया गया। मुख्यातिथि श्री एच.आर. गंधार जी ने सभा को संबोधित करते हुए बताया कि ऐसे कार्यक्रमों से हमारी वैदिक संस्कृति हम सब के मन में विरासत के रूप में हमेशा जीवित रहती है। विद्यालय की प्राचार्या श्री मति सुनीता रनयाल जी ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को धार्मिक भावना से अवगत करवाना और वैदिक संस्कृति को जन–जन तक पहुँचाना है। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ, तत्पश्चात् सभी ने ऋषि लंगर का आनंद लिया।

महर्षि का वेद–भाष्य तर्क व विज्ञान पर आधारित है

● खुशहाल चन्द आर्य

यह लेख मैंने आदरणीय डॉ. सोमदेव जी शास्त्री द्वारा लिखित "यजुर्वेद सन्देश" पुस्तिका से उद्घृत किया है। डॉ. साहब आर्य जगत के एक उच्च कोटि के प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान हैं। सभी आर्यजन इनको श्रद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। प्रसन्नता की बात यह है कि डॉ. साहब मेरे परिवार से विशेष रूप से जुडे हुए हैं। मेरे परिवार वालों ने मेरे स्व. पिता गोविन्द राम आर्य (प्रधान जी) की पुण्य स्मृति में "आदर्श आर्य प्रवर" शीर्षक की पुस्तक छपवाई थी। उसका सम्पादन डॉ. साहब ने ही किया था, जिसकी सभी लोगों ने बड़ी प्रशंसा की थी। इसी पुस्तक के उदघाटन के समय सोमदेव जी मेरे गाँव देवराला (हरियाणा) भी गए थे। मेरे पूरे परिवार से इनका घनिष्ठ सम्बन्ध है। कलकत्ता में मेरे घर को भी इन्होंने कई बार पवित्र किया है। इस प्रकार ये मेरे पूरे परिवार से पूर्ण परिचित हैं।

इनकी पुस्तक "यजुर्वेद सन्देश" को पढ़ने से उनकी प्रकाण्ड विद्वत्ता का परिचय मिल जाता है। इस पुस्तक को पढ़ने से यह सुस्पष्ट हो जाता है कि महर्षि देव दयानन्द का वेद–भाष्य, अन्य भाष्यकारों से कहीं अधिक सार्थक और सही है जो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है। पहले के भाष्यकार वेदों में हिंसा, इतिहास तथा केवल कर्म काण्ड को ही मानते थे। परन्तु महर्षि ने वेदों के सही अर्थ लगाकर यह बतला दिया कि वेदों में कहीं पर भी हिंसा नहीं है और न ही इनमें इतिहास है और वेद केवल कर्म काण्ड के ही नहीं बल्कि सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ हैं। महर्षि ने यह सिद्ध करके मानव–मात्र का बड़ा उपकार व कल्याण किया है। इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने भी जो लेख लिखा है, इसे पढ़ कर मैं आशा करता हूँ कि सुधी पाठक गण वेदों के सही स्वरूप को समझ पाएँगे। यही मेरी उपलब्धि होगी। लेख इस भाँति है–

मध्यकालीन वेद भाष्यकारः– मध्यकाल में अनेक वेद भाष्यकार हुए हैं जिन्होंने वेदों का या वेद के कुछ हिस्सों का भाष्य किया है। विक्रम संवत 687 में स्कन्द स्वामी ने ऋग्वेद के प्रथम अष्टक के 4–5 सूक्तों का आधियाज्ञिक प्रक्रिया (कर्मकाण्ड परक) वेद भाष्य किया। स्कन्द स्वामी के समय ही उद्गीथ हुए हैं, उन्होंने ऋग्वेद के दसवें मण्डल के पाँचवें सूक्त के चौथे मन्त्र से 86 सूक्त थे 6 मन्त्र तक वेदभाष्य किया। यह भाष्य भी कर्म काण्ड परक ही है। विक्रम संवत् की 12वीं शताब्दी में बेंकट माधव ने ऋग्वेद का आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अनुसार भाष्य किया। विक्रम संवत् की 13वीं शताब्दी में आत्मानन्द ने ऋग्वेद के अस्यवामीय सूक्त (ऋग्वेद के पहले मण्डल के 164 सूक्त) का आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार भाष्य किया। आनन्द तीर्थ ने (विक्रम संवत् 1255–1335) ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के चालीस सूक्तों का आध्यात्मिक भाष्य किया। सायणाचार्य (विक्रम संवत् 1372–1442) ने सम्पूर्ण ऋग्वेद का (बाल खिल्य सूक्तों को छोड़कर) आधियाज्ञिक प्रक्रिया परक भाष्य किया। कहीं–कहीं आध्यात्मिक प्रक्रियानुसार अर्थ भी किए हैं।

उव्वट (विक्रम संवत् 1100) ने यजुर्वेद का भाष्य किया जो कर्म काण्ड परक भाष्य है। महीधर (विक्रम संवत्1645) ने भी यजुर्वेद का भाष्य याज्ञिक प्रक्रियानुसार किया। इन दोनों भाष्यकारों ने यजुर्वेद के प्रत्येक मन्त्र को यज्ञ में होने वाली प्रक्रियाओं के साथ जोड़ा। गोमेध, अश्वमेधादि शब्दों का अनर्थ करके पशु हिंसा से जघन्य कृत्य को यजुर्वेद के मन्त्रों द्वारा प्रतिपादित किया। यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का भाष्य भट्ट भास्कर ने विक्रम संवत् 1100 में किया तथा इसी शाखा का सायण ने भी भाष्य किया।

मध्यकालीन सभी आचार्यों ने अपने भाष्यों में मुख्य रूप से याज्ञिक कर्म काण्ड का वर्णन किया। इसमें भी पशुहिंसा, मांसभक्षण, जादू–टोना, मारण–उच्चाटन, अग्नि–इन्द्रादि देवताओं का सशरीर स्वर्ग में निवास, उनका परिवार सहित सुख, ऐश्वर्यों को भोगना, यज्ञ की हवि (आहुति) का भक्षण करने के लिए स्वर्ग से अदृश्य रूप में यज्ञ स्थल पर आना और यजमान को आशीर्वाद देना, मरने के बाद यजमान को स्वर्ग में ले जाना आदि अनेक मिथ्या विचारधारा वेद के नाम पर प्रचलित करने का कार्य किया।

सामवेद का भाष्य भरत स्वामी ने विक्रम संवत् 1360 के लगभग किया, कर्मकाण्ड परक अर्थों के साथ–साथ कहीं–कहीं अध्यात्म परक अर्थ भी किए। माधव जो विक्रम की सातवीं शताब्दी में हुए, उन्होंने भी सामवेद का भाष्य किया। आधियाज्ञिक प्रक्रिया के अतिरिक कुछ मन्त्रों का आध्यात्मिक अर्थ भी किया। अपने भाष्य में ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रमाण भी उद्घृत कियें। भरत स्वामी और माधव के अतिरिक्त सायण ने भी सामवेद का भाष्य किया। अथर्ववेद का मध्यकालीन आचार्यों में केवल सायण ने ही भाष्य किया। इसमें भी उन्होंने मन्त्र–तन्त्र, जादू–टोना कृत्य, अभिचार (हिंसा) आदि कृत्यों का वर्णन भाष्य करते हुए किया।

मध्यकालीन सभी आचार्यों ने अपने भाष्यों में मुख्य रूप से याज्ञिक कर्म काण्ड का वर्णन किया। इसमें भी पशुहिंसा, मांसभक्षण, जादू–टोना, मारण–उच्चाटन, अग्नि–इन्द्रादि देवताओं का सशरीर स्वर्ग में निवास, उनका परिवार सहित सुख, ऐश्वर्यों को भोगना, यज्ञ की हवि (आहुति) का भक्षण करने के लिए स्वर्ग से अदृश्य रूप में यज्ञ स्थल पर आना और यजमान को आशीर्वाद देना, मरने के बाद यजमान को स्वर्ग में ले जाना आदि अनेक मिथ्या विचारधारा वेद के नाम पर प्रचलित करने का कार्य किया। जिससे सामान्य जनता वेदों से विमुख हो गई। वेद केवल व्यक्ति विशेष (ब्राह्मणों) के लिए ही हैं जो याज्ञिक कर्मकाण्ड कराते हैं। इसी प्रकार वेद केवल याज्ञिक कर्मकाण्ड के लिए ही उपयोगी हैं। यह प्रसिद्ध कर दिया गया। इस प्रकार जन सामान्य की वेद से रूचि हट गई। वेदकथा, वेदप्रवचन प्रचारादि के स्थान पर भागवत, गीता, उपनिषद् और सत्यनारायण आदि की कथा तथा प्रवचनादि हो गए।

पाश्चात्य विद्वानः– आधुनिक युग (18वीं 19वीं शताब्दी) में वेदों पर भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों के विद्वानों ने भी कार्य किया। सन् 1850 में डॉ. एच–एच विल्सन ने सायण भाष्य के आधार पर ऋग्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया। प्रो. मैक्समूलर ने रूद्र, मारूत्, वायु आदि देवताओं के सूक्तों का अंग्रेजी में अनुवाद किया तथा वेद की संहिताओं के तथा सायण भाष्य के सम्पादन का भी परिश्रमसाध्य कार्य किया। जर्मन भाषा में ऋग्वेद का पद्यानुवाद जर्मन विद्वान ग्रासमान ने सन् 1876–1877 में किया। इसी प्रकार जर्मन विद्वान ए. लुडविग, एच. ओल्डनवर्ग ने ऋग्वेद का जर्मन अनुवाद किया। आर. टी. एच ग्रिफिथ ने (सन् 1881–1898) चारों वेदों का अंग्रेजी मे पद्यानुवाद किया। लांगल्वा नामक फ्रांसीसी विद्वान ने फ्रेंच भाषा में ऋग्वेद का अनुवाद किया। डॉ. कीथ ने तैत्तिरीय संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद किया। थियोडोर बेन्फे ने (सन् 1848 में) सामवेद (कौथुम शाखा) का जर्मन अनुवाद किया। अथर्ववेद (शौनक संहिता) का W.H.ने तथा अथर्ववेद (पैप्पलाद शाखा) का ब्लूम फील्ड ने अंग्रेजी अनुवाद करके सन् 1901 में प्रकाशित किया। इस प्रकार विदेशों में वेदों पर विगत दो सौ वर्षों में बहुत कार्य हुआ।

महर्षि दयानन्दः– महर्षि दयानन्द ने बहुत थोड़े समय में, वेदों का प्रचार करना, ईश्वर, धर्म और वेदों के नाम पर प्रचलित पाखण्ड और अन्धविश्वास का खण्डन, शंका समाधान करना, शास्त्रार्थ करना, स्वार्थी लोगों द्वारा उपस्थित विघ्न बाधाओं को सहन करना, दिन–रात प्रचार–यात्रा करना, छोटे–बड़े 43 ग्रन्थों को लिखना अपने आप में एक अद्भुत कार्य उन्होंने किया। स्वार्थी और मूर्ख लोगों ने उन पर ईंट–पत्थर फैंके, खाने में विष मिलाया, कुटिया में आग लगाई, ध्यान में बैठे हुए को नदी में फैंका आदि दुष्कृत्य किये किन्तु गुरु भक्त एवं प्रभु विश्वासी देव दयानन्द अपने लक्ष्य से कभी विचलित नहीं हुए और गुरु को दिया वचन उन्होंने आजीवन निभाया।

मध्यकालीन आचार्यों ने यजुर्वेद का भाष्य करते हुए उव्वट और महीधर ने गोमेध, अश्वमेध नरमेधादि शब्दों को लेकर गाय, घोड़ा, नर आदि की हिंसा का विस्तार से वर्णन किया। यजुर्वेद के छठे अध्याय के 7 से 22वें मंत्र तक पशु को बाँधना, देवता के लिए उसका वध करना, आहुति देने का भयानक चित्रण किया है। साथ ही यह भी प्रचलित कर दिया कि यज्ञ के लिए की गई, हिंसा नहीं होती। ऐसा कुकृत्य वेदों के साथ किया गया, जिसे पढ़कर विवेकशील व्यक्ति वेदों से विमुख हो गए। महर्षि दयानन्द ने वेदों के प्रमाण देकर यज्ञों में हिंसा का घोर विरोध किया। उन्होंने यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र में "पशुन पाहि" पशुओं की रक्षा करने का उपदेश दिया। गौ को "अघन्या" अर्थात् हिंसा के अयोग्य बताया और गोमेध का अर्थ गाय की हिंसा नहीं, अपितु इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना है, अश्वमेध का अर्थ घोड़े को मारना नहीं अपितु प्रजा का पालन करना है। मृतक शरीर अर्थात् शव का अन्त्येष्टि संस्कार को नरमेध बताया। साथ ही यह भी बताया कि इनकी हिंसा करने वाले को सीसे की गोली से मार देना चाहिए। वेदों के नाम पर पशु हिंसा के कलंक को समाप्त करने का अद्भुत कार्य महर्षि ने अपने वेद–भाष्य के द्वारा किया। साथ ही वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बतलाकर वेदों के महत्त्व को बढ़ाया और वेदों को केवल कर्मकाण्ड तक ही सीमित नहीं रखा।

गोविन्द राम आर्य अण्ड सन्स
180 महात्मा गान्धी रोड
(दो तल्ला) कोलकात्ता–700007

thearyasamaj.org

स्तुतिप्रार्थनोपासना के आठ मंत्रों पर एक विहंगम दृष्टि

● ओम प्रकाश आर्य

ये आठ मंत्र महर्षि दयानन्द सरस्वती की महान् देन हैं। उन्होंने लुप्त हुई ऋषि परंपरा की उक्त खोज की। मानवमात्र के लिए ये सभी मंत्रोपदेश एक समान हैं। हम ऋणी हैं उस ऋषि के। उसी क्रम में प्रत्येक कर्मकांड के पूर्व विचारणीय, पठनीय, चिन्तनीय स्वस्तिवाचनम्, शांतिकरणम् एवं स्तुतिप्रार्थनोपासना के मंत्रों का चयन किया है। हम यहाँ स्तुतिप्रार्थनोपासना के आठ मंत्रों के ज्ञान, विज्ञान व गूढ़ तथ्यों पर विचार करेंगे।

हम लोक में देखते हैं कि जितने महापुरुष हैं उनमें भगवान माने जाने वाले महापुरुषों की लोग स्तुति करते हैं, प्रार्थना करते हैं और उपासना करते हैं। कुछ लोग जड़ देवताओं के साथ ऐसा करते हैं तो कुछ लोग मानव के द्वारा कल्पित देवी-देवता व भगवान के प्रति ऐसा करते हैं। वास्तव में यह मानव की भ्रममूलक स्थिति है। महापुरुषों की स्तुतिप्रार्थनोपासना हो ही नहीं सकती। स्तुतिप्रार्थनोपासना तो केवल ईश्वर की होती है अन्य किसी की नहीं। महापुरुषों का जीवनचरित्र अनुकरणीय होता है। उन महापुरुषों के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए न कि उनकी स्तुतिप्रार्थनोपासना करनी चाहिए क्योंकि उनका चरित्र ग्राह्य होता है। उनके चरित्र से सीख लेने पर कुछ मिल सकता है अन्य क्रिया-कलाप से कुछ नहीं होगा।

इसकी परिभाषा को बताते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी 'स्वमंतव्यामंतव्यप्रकाश' में लिखते हैं: स्तुति- "गुण कीर्तन, श्रवण और ज्ञान होना, इसके फल प्रीति आदि होते हैं।" प्रार्थना- "अपने सामर्थ्य के उपरान्त ईश्वर के सम्बन्ध से जो विज्ञान आदि प्राप्त होते हैं उनके लिए ईश्वर से याचना करना और इसके फल निरभिमान आदि होते हैं।" उपासना- "जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव, पवित्र हैं वैसे अपने करना, ईश्वर को सर्वव्यापक अपने का व्याप्य ज्ञान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहलाती है। इसके फल ज्ञान की उन्नति आदि हैं।" ये तीनों परिभाषाएँ महापुरुषों के साथ नहीं घट सकतीं और न ही किसी अन्य जड़ देवी-देवता में।

ईश्वर में असंख्य गुण हैं उसी का गुणकीर्तन, श्रवण और ज्ञान हो सकता है। वह अनन्त सामर्थ्य से युक्त है, परम ऐश्वर्यवान है, ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण है उसी से इन सब चीजों की प्रार्थना की जा सकती है अन्य किसी से नहीं। कारण यह है कि जिसके पास जो चीज है उससे वही चीज माँगने से मिल सकती है अन्य से नहीं। ईश्वर ही सर्वव्यापक है अन्य कोई नहीं। योगाभ्यास से साक्षात् उसी का हो सकता है अन्य किसी का नहीं। पूर्ण पवित्रता उसी में है अन्य में नहीं। इसलिए अन्य कोई भी उपास्य नहीं हो सकता। यदि कोई ऐसा अन्य के साथ करता है तो वह निरर्थक है। उसका कोई भी फल नहीं मिलने वाला है।

अब जरा विचार कीजिए कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जो स्तुतिप्रार्थनोपासना के आठ मंत्र बताए हैं उनमें से कौन सा मंत्र स्तुतिपरक है, कौन सा मंत्र प्रार्थनापरक और कौन सा मंत्र उपासनापरक है? पहला मंत्र "ओं विश्वानि."...है। इस मंत्र में 'सवितः और 'देव' पद स्तुतिपरक हैं क्योंकि इन दोनों पदों से ईश्वर के गुणों पर प्रकाश पड़ रहा है। "दुरितानि.... आसुव" तक के पद प्रार्थनापरक हैं क्योंकि इनमें ईश्वर से प्रार्थना की गई है। पहला मंत्र स्तुति और प्रार्थना से युक्त है। दूसरा मंत्र है- 'हिरण्यगर्भः.......हविषा विधेम।' इस मंत्र में 'हिरण्यगर्भः.......द्यामुतेमां" तक के पद स्तुतिपरक हैं एवं "कस्मै.... ...विधेम" तक के पद उपासनापरक हैं। इस मंत्र में उसके गुणों का उल्लेख एवं आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का उल्लेख है। इसी प्रकार तीसरा मंत्र "येन द्यौरुग्रा. ...विमानः" तक के सारे पद स्तुतिपरण हैं और "कस्मै.....विधेम" तक के पद उपासनापरक हैं। "कस्मै....विधेम" को छोड़कर शेष सारे पदों में ईश्वर के गुणों का वर्णन है। उन गुणों में ज्ञान भी है, विज्ञान भी है और बुद्धि की पूर्णता भी है। छठवाँ मंत्र है "प्रजापते..... और "यत्कामास्ते.... रयीणाम्" इस मंत्र में "प्रजापते....बभूव" तक के पद स्तुतिपरक हैं और "यत्कामास्ते..... रयीणाम् के पद प्रार्थनापरक हैं क्योंकि इसमें ईश्वर से याचना की गई है। सातवाँ मन्त्र है- "स नो.....अध्यैरयन्त" इस मंत्र में से "स नो...विश्वा" तक के पद स्तुतिपरक हैं और "यत्र देवा....अध्यैरयन्त" के पद उपासनापरक हैं। आठवाँ मंत्र है "अग्ने नय....उक्तिं विधेम"। इस मंत्र में "अग्ने, देव, विद्वान्" पद स्तुतिपरक हैं एवं शेष पद प्रार्थनापरक हैं। इसमें सर्वाधिक पद हैं।

स्तुतिपरक सारे पदों में परमात्मा के विज्ञान का रहस्य गुंफित है। उदाहरणार्थ- देव, हिरण्यगर्भ, पतिः, भूतस्य, आत्मदा, ईशे, रजसः, विमानः, जनिता, विश्वा, अग्ने आदि पद। इन पदों में ज्ञान और विज्ञान भरा है। इनके वैज्ञानिक अर्थों का चिन्तन करने से परमात्मा के प्रति स्वतः प्रीति बढ़ जाती है। साथ ही एक सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, शक्ति का बोध भी होता है। अकेले "हिरण्यगर्भ" पर सृष्टिविज्ञान का प्रकाशक है। "देव" पद समस्त लोक-लोकान्तरों का विधायक है। इसी प्रकार पति, ईशे, जनिता, अग्ने, आदि पद सृष्टि के रहस्य का उद्घाटन करते हैं। वैदिक सम्पत्ति नामक पुस्तक में "हिरण्यगर्भः" पद की बड़ी वैज्ञानिक व्याख्या की गई है। इस विज्ञान का चिन्तन-मनन कर परमात्मा की बुद्धिमत्ता का अनुमान लगाया जा सकता है। इससे मनुष्य में उत्साह आता है और उसको परमात्मा का संबल प्राप्त होता है।

विश्वशांति, मानवकल्याण, राष्ट्रप्रेम, एकता, सहिष्णुता, प्रेम, आनंद, मानवता, आरोग्य, आत्मविश्वास जैसे अनेक गुणों का विकास एवं भावना इन मंत्रों में सन्निहित है। पहला मंत्र "ओं विश्वानि." से जब मानव के अंदर से दुर्गुण, दोष बुराईयाँ दूर हो जाएँगी, आत्मसुधार हो जाएगा तो विश्वशांति, मानवकल्याण, राष्ट्रप्रेम, आनन्द, प्रेम का प्रसार होगा। "वयं स्याम" पदों में जब हम धन-सम्पत्तियों के स्वामी बनने की प्रार्थना करेंगे तो उससे मानवता का विकास होगा। परस्पर सहिष्णुता का भाव उत्पन्न होगा। "हिरण्यगर्भ, देव अग्ने" जैसे पदों से एक सर्वव्यापक सत्ता का बोध होने से एकता और आत्मविश्वास का भाव उत्पन्न होगा। "अग्ने नय सुपथा" इन पदों में निहित भाव पर विचार करने से विदित होगा कि जब हर मनुष्य अच्छे रास्ते पर चलने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करेगा तो इस धरती पर ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, वैमनस्य, स्वार्थ जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ होंगी ही नहीं।

ज्ञान, विज्ञान और सार्वदेशिक भाव भरे हैं इन मंत्रों में। पाठ मात्र से कुछ नहीं होता, ज्ञान और कर्म का समन्वय होना चाहिए। ईश्वरानुभूति के लिए बाहर भटकने की कहाँ आवश्यकता है? सब कुछ तो अपने अन्दर है। आत्मा में व्याप्त परमात्मा की प्रेरणा का भाव तभी होता है जब मनुष्य सुपथ पर चलता है। ईश्वरीय कर्म (नेक कर्म) करता है। हमारा चिन्तन-मनन भी उसी प्रकार का होना चाहिए। ईश्वरीय प्रेरणा की एक छोटी सी घटना बताना चाहूँगा। एक बार आर्य समाज में एक स्वामी जी पधारे। मैंने उनकी सेवा-शुश्रूषा की। तीसरे दिन जब वे जाने लगे तो आर्य समाज के दक्षिणा के अलावा मैंने अपनी ओर से कुछ दक्षिणा देने का मन में संकल्प किया। सोचा कि अभी मैं अपनी ओर से कुछ दक्षिणा देता हूँ। संयोग से इसी बीच मुझे किसी आवश्यक कार्यवश आधे घंटे के लिए बाज़ार जाना पड़ गया। वहाँ कुछ विलम्ब हो गया। स्वामी जी समाज से प्रस्थान कर गए। जब मैं आया और देखा तो स्वामी जी नहीं थे। मन पश्चाताप से भर गया। विचार किया कि मुझे स्वामी जी को दक्षिणा देकर जाना चाहिए। भरे मन से पश्चात्ताप करता हुआ जा रहा था और सोच रहा था कि काश स्वामी जी मिल जाते। ईश्वरीय "प्रेरणा कहूँगा- स्वामी जी बस स्टैंड पर जिस बस का इन्तजार कर रहे थे, वह देर से थी। स्वामी जी वहीं बैठे मिले। उन्हें देखकर खुशी का पारावार नहीं रहा। तुरन्त उन्हें अपनी ओर से कुछ दक्षिणा दिया और मन में अपार संतोष का अनुभव हुआ। कभी-कभी जीवन में ऐसी सात्विक अनुभूति होती है। इसे ईश्वरीय प्रेरणा मानना पड़ेगा। "यत्कामास्ते.....अस्तु." यह यहाँ विचारणीय है। हमें इन मंत्रों के अर्थों पर विचार करना चाहिए। चिन्तन करना चाहिए।

ईश्वर में असंख्य गुण हैं उसी का गुणकीर्तन, श्रवण और ज्ञान हो सकता है। वह अनन्त सामर्थ्य से युक्त है, परम ऐश्वर्यवान है, ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण है उसी से इन सब चीजों की प्रार्थना की जा सकती है अन्य किसी से नहीं। कारण यह है कि जिसके पास जो चीज है उससे वही चीज माँगने से मिल सकती है अन्य से नहीं। ईश्वर ही सर्वव्यापक है अन्य कोई नहीं। योगाभ्यास से साक्षात् उसी का हो सकता है अन्य किसी का नहीं। पूर्ण पवित्रता उसी में है अन्य में नहीं। इसलिए अन्य कोई भी उपास्य नहीं हो सकता। यदि कोई ऐसा अन्य के साथ करता है तो वह निरर्थक है। उसका कोई भी फल नहीं मिलने वाला है।

आर्य समाज रावतभाटा वाया
कोटा (राजस्थान) 323307

hearyasamaj.org

संसद की दीवारों के संदेश

● प्रो. उमाकांत उपाध्याय

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पहली बार संसद में प्रवेश करते समय संसद की सीढ़ियों पर सिर रखकर प्रणाम किया है। इससे संसद की गरिमा बहुत बढ़ गयी है। आशा है कि सांसद महानुभाव इस भावना और गरिमा का सम्मान करेंगे।

संसद भवन की दीवारों और लिफ्टों के गुम्बजों पर लिखे हुये संदेश संसद के सदस्यों, सांसदों से कुछ उम्मीद करते हैं। संसद के इन संदेशों का चयन करने वाले पूर्व राजनायिकों के प्रति मन में श्रद्धा के भाव जग उठते हैं। आज के बहुसंख्यक सांसदों के पतनशील आचरण, स्वार्थी व्यवहारों पर विचार करने से इन आदर्श संदेशों का महत्व बहुत बढ़ जाता है। संसद भवन के प्रथम द्वार से होकर जब हम केन्द्रीय सभागार के प्रांगण की ओर चलते हैं तो प्रवेश द्वार पर भारतीय संस्कृति का एक उदात्त आदर्श निम्न श्लोक में लिखा हुआ मिलता है – **"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।"** (पंचतंत्रम्) इसका अर्थ हुआ कि यह अपना है और वह पराया है, ऐसा विचार छोटे चित्त वालों का होता है। जो उदार चरित्रवाले होते हैं वे तो सारे विश्व को अपना परिवार समझते हैं। आज के भूमण्डलीकरण और विश्व के बाजारीकरण और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के विश्व के संसाधनों की लूट के युग में ऐसे आदर्शों का महत्त्व बढ़ जाता है।

लोकसभा सुविशाल सभागार में लोकसभा के अध्यक्ष के पीठ के पीछे दीवार पर बौद्ध युग की प्रसिद्ध सूक्ति– **"धर्म चक्र – प्रवर्तनाय"** लिखा हुआ है इसका अर्थ हुआ कि सांसदों को धर्म चक्र के निर्माण के लिये प्रयत्नशील बने रहना चाहिए। इस सूक्ति को देखते हुये हम संसद के सदस्यों को पंथ निरपेक्ष होने की सोच सकते हैं। इससे यह सुस्पष्ट है कि हमारे संसद का आदर्श धर्म निरपेक्ष नहीं है, बल्कि सम्प्रदाय निरपेक्ष है। संसार में अनेक पथ हैं– शैव, शाक्त, वैष्णव आदि हिन्दुओं के सम्प्रदाय हैं, शिया, सुन्नी आदि मुसलमानों के सम्प्रदाय हैं, कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट आदि ईसाइयों के सम्प्रदाय हैं, जैन, बौद्ध, पारसी, सिक्ख सभी सम्प्रदायों में ही परिगणित हैं। इसके प्रति संसद का निरपेक्ष समान भाव होना ही इष्ट है।

धर्म तो मानव समाज को, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को धारण करता है **"धारणाद् धर्म मित्याहुः"** कहा गया है। जिस आचरण से सम्पूर्ण विश्व मनुष्य पशु, पक्षी, प्राकृतिक संसाधन सभी धारण, पोषण हो वह धर्म कहलाता है। मनु महाराज ने कहा है – **धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयम् शौच मिन्द्रिय निग्रहः। धीविद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणं।।** इसी के साथ अहिंसा और जोड़ देने से धर्म के ग्यारह लक्षण हो, जाते हैं। राज्यसभा के एक प्रवेश द्वार पर धर्म की व्याख्या लिखी हुयी है। **अहिंसा परमो धर्मः।** राष्ट्रपिता गांधीजी की सभाओं में गाया जाता था– वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाने रे। आज के युग में हमारी संसद में जोर जबर्दस्ती से अपनी बात मनवाने का प्रयास होता है।

संसद की दीवारों पर जहां भी भारत का राजचिह्न अंकित है वहाँ सर्वत्र लिखा हुआ है– **"सत्यमेव जयते"** इसका भाव हुआ कि सांसदों का कर्त्तव्य है कि वे सत्य की जीत की चेष्टा करें। यह पूरा वाक्य है– **"सत्यमेव जयते नानृतम्"**, ऋत् का अर्थ होता है उचित अनृत का अर्थ होता है अनुचित। भाव यह हुआ कि जो सत्य अनृत है, अनुचित है उसकी जीत की चेष्टा नही होनी चाहिए। उदाहरण के लिये स्कैण्डल होते हैं, घूस का बाजार सर्वत्र गर्म रहता है, चोरी, भ्रष्टाचार होते हैं इसलिए उनकी सत्ता तो है पर वे अनुचित है। सांसदों का कर्तव्य है कि वे अनुचित का समर्थन न करें। आज के युग में हमारी संसद में उचित का विचार किए बिना पार्टी और नेताओं के समर्थन में बहुत कुछ होता रहता है। कुछ दिनों पहले राष्ट्रमण्डल खेलों का स्कैण्डल, 2 जी का मामला, कोलगेट का स्कैण्डल, सभी सत्य की निर्मम हत्या है। सत्यमेव जयते का संदेश इस तरह के आचरण को रोकता है।

राज्य सभा के एक प्रवेश द्वार पर लिखा हुआ है – **सत्यम् वद् धर्मचर।** यह तैत्तरीय उपनिषद का वचन है। इसका सुस्पष्ट संदेश है कि संसद के सदस्य सत्य बोले और धर्म का आचरण करें। हम यह देख रहे है कि धर्म के आचरण की अनुशंसा अनेक बार की गयी है। राज्यसभा के एक ओर प्रवेशद्वार पर लिखा हुआ है– **"एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति** (ऋग. 1/164/46)। ऋग्वेद मे तो यह उक्ति परमेश्वर के सम्बन्ध में है किन्तु यहाँ संसद में इस आलेख का आशय यह समझ में आता है कि देशहित, देश की सुरक्षा, देश का बहुमुखी विकास सभी सदस्यों का सांझा सत्य है और सभी सदस्य मिलजुल कर आपसी समन्वय से इस सत्य को पाने का प्रयास करें। एक और प्रवेश द्वार पर भगवत् गीता का निम्न वाक्य लिखा हुआ है– **"स्वे–स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धि लभते नरः"** (गीता– 18, 45) संसद का प्रत्येक सदस्य अपने–अपने कर्म का, कर्तव्यों का पालने करे हुए संसद के उद्देश्य की पूर्ति कर सकता है। आज हमारे बहुदलीय प्रजातन्त्र में राजनीतिक दल स्वदेश के स्वार्थ को भुलाकर दलीय स्वार्थों में उलझ जाते हैं। कई बार तो सदस्यों के आपसी नोंक–झोंक में लड़ाई हो जाती है। संसद के ये वाक्य दलीय स्वार्थों से ऊपर राष्ट्रीय स्वार्थ की अनुशंसा कर रहे हैं।

संसद की प्रथम लिफ्ट के गुम्बद पर महाभारत का निम्न श्लोक अंकित है–

"न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्मो न सो यत्र न सत्यमस्ति, सत्यम् न तत् यत् छलमभ्युपैति।।" (महाभारत)

अर्थात् वह सभा या संसद, संसद नहीं होती जिसमें वृद्ध, वरिष्ठ ज्ञानवृद्ध अनुभववृद्ध, अर्थात् ज्ञानी और अनुभवी लोग न हों। वे वरिष्ठ वृद्ध जन भी नहीं है जिसके वक्तव्य राष्ट्रधर्म और राष्ट्रहित में न हो, राष्ट्र धर्म भी ऐसा हो जिसमें सत्य की रक्षा होती हो और सत्य भी ऐसा हो जिसमें छल–कपट भरा न हो। इस संदेश का आशय यह है कि हमारे राष्ट्र धर्म, हमारी राजनीति जितना पारदर्शी हो, हमारे राष्ट्र में जितना छल–कपट कम होगा उतना ही हमारे राष्ट्र और हमारी संसद की गरिमा बढेगी।

धर्म तो मानव समाज को, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को धारण करता है "धारणाद् धर्म मित्याहुः" कहा गया है। जिस आचरण से सम्पूर्ण विश्व मनुष्य पशु, पक्षी, प्राकृतिक संसाधन सभी धारण, पोषण हो वह धर्म कहलाता है। मनु महाराज ने कहा है – धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयम् शौच मिन्द्रिय निग्रहः। धीविद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणं।। इसी के साथ अहिंसा और जोड़ देने से धर्म के ग्यारह लक्षण हो, जाते हैं। राज्यसभा के एक प्रवेश द्वार पर धर्म की व्याख्या लिखी हुयी है। अहिंसा परमो धर्मः। राष्ट्रपिता गांधीजी की सभाओं में गाया जाता था– वैष्णव जन तो तेने कहिये जे पीर पराई जाने रे। आज के युग में हमारी संसद में जोर जबर्दस्ती से अपनी बात मनवाने का प्रयास होता है।

लिफ्ट क्रमांक के दो गुम्बद् पर मनुस्मृति का निम्न श्लोक लिखा हुआ है–

"सभा वा न प्रवेष्टव्या, वक्तव्यम् वा समंज्जसम्।
अब्रुवन, विब्रुवन् वापि नरो भवति किल्मिषी।।" (मनु. 8/13)

यह आदेश सभासदों को उनके आचरणों की गरिमा के प्रति सतर्क करता है। इस श्लोक का भावार्थ यह है कि सभासद सभा में प्रवेश न करें, यह तो उनकी इच्छा पर है (हम यह समझते है कि जब कोई संसद का सदस्य बन जाता है तो वह संसद में प्रवेश कर चुका, उसे अनुपस्थित होने का अधिकार नहीं है) सभासद जब संसद के सदस्य बन चुके तो उन्हें राष्ट्रधर्म के अनुकूल ही बोलना चाहिए। जो सदस्य संसद में बोलेगा ही नहीं या झूठ बोलेगा वह पाप करेगा। हम पिछली लोकसभा के राष्ट्रमण्डलीय खेलों, 2जी के घोटाले और कोलगेट के घोटाले के प्रसंग में देख चुके हैं कि पिछली संसद में कैसे–कैसे छल हुये थे।

लिफ्ट क्रमांक तीन पर लिखा हुआ है–

"दया मैत्री च भूतेषु दानम् च मधुरा च वाक्।
न ही दृशम् संवननं त्रिषुलोकेषु विद्यते।।"

महाभारत (विदुर नीति)

इसका भाव यह है कि प्राणी मात्र पशु–पक्षी मनुष्य आदि सबके प्रति दया, प्राणी मात्र से मित्रता, मधुर वचन और दान देने की प्रवृत्ति (केवल धन दान नहीं था भूमिदान ही नहीं, बल्कि श्रमदान, विद्यादान आदि) संसार मे दुर्लभ है। इस सूक्ति का यह आशय है कि सभासद, जनप्रतिनिधि इन मानव गुणों से अपने को परिपूर्ण बनाये रखे।

लिफ्ट क्रमांक चार पर शासक के राजधर्म पालन का मार्गदर्शन करने वाला शुक्रनीति का निम्न श्लोक लिखा हुआ है–

"सर्वदा स्यान्नृपः प्राज्ञः, स्वमते न कदाचन।
सभ्याधिकारिप्रकृति–सभासत्सुमते स्थितः।।"

शुक्रनीतिः (2/3)

इसका आशय यह है कि हमारी कार्यपालिका, प्रधानमन्त्री ओर उनके मन्त्रिमण्डल के सदस्य विद्वान् हों, किन्तु अपनी बात पर हठपूर्वक अड़े न रहें। उन्हें सभासदों के विचार और परामर्श से निर्णय लेना उचित है।

संसद भवन के इन संदेशों के परिप्रेक्ष्य में हमारा हृदय उन अपने पूर्व पुरुषों की सूझ–बूझ पर श्रद्धा से भर उठता है। आज के संसद सदस्यों के अनेक बार अनुचित आचरणों से और मन्त्रिमण्डलीय अनुचित निर्णयों को देखते हुए इन संदेशों का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है।

"ईशावास्यम्"
पी–30, कालिन्दी हाउसिंग स्टेट,
कोलकाता–89
फोनः 033–25222636, 9432301602

thearyasamaj.org

राष्ट्रवादी महर्षि दयानन्द सरस्वती

● कृष्णकान्त वैदिक

काठियावाड़ की मोरवी रियासत में एक छोटे से कसबे टंकारा में श्री कर्षण द्विवेदी जी के घर एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाम मूलशंकर रखा गया था। मूलशंकर ने संस्कृत का अध्ययन किया और वेदों का कण्ठस्थ करने को अभ्यास प्रारम्भ किया। यजुर्वेद उन्हें कण्ठस्थ हो गया और अन्य वेदों के भी अधिकतर मन्त्रों को उन्होंने याद कर लिया। मूलशंकर के जीवन में कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं कि वे घर से निकल कर सच्चे शिव की तलाश और मृत्यु से छूटने के उपाय के लिए संन्यास के मार्ग पर चल पड़े। वह एक सच्चे गुरु की तलाश करने लगे और अन्त में उन्हें विरजानन्द के रूप में व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान मिले जो प्राचीन शास्त्रों में भी बड़ी निष्ठा रखते थे। वे अन्धविश्वास और दकियानूसी प्रथाओं के घोर विरोधी थे। अपने शिष्य को स्वामी विरजानन्द ने न केवल अपने इन गुणों से सुसज्जित किया अपितु उनमें राष्ट्रप्रेम और वेदानुराग की भावना कूटकूट भर दी। योग्य गुरु की अनुकम्पा से दयानन्द एक प्रकाण्ड पण्डित और निपुण तर्कशास्त्री बने। विद्याध्ययन समाप्त होने के बाद स्वामी विरजानन्द ने अपने शिष्य दयानन्द को अपना जीवन देश को समर्पित करते हुए उपकार करने, सत् शास्त्रों का उद्धार करने, अविद्या को मिटाने और वैदिक धर्म फैलाने का आदेश दिया। अपने गुरु को दिए हुए वचनों का पालन करते हुए वे अपने कर्तव्य पथ पर चल पड़े। अप्रैल 1867 में कुम्भ के मेले से उन्होंने समाज सुधार का कार्य आरम्भ किया। समाज में व्याप्त पाखण्ड, अन्धविश्वास, कुरीतियों, गुरुडम, आडम्बर, जातिवाद, सतीप्रथा, बालविवाह आदि कुप्रथाओं के विरुद्ध उन्होंने सारे देश के भिन्न-भिन्न स्थानों में घूमघूम कर घोर प्रचार करते हुए आवाज बुलन्द की। अपने विचारों को महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश नामक अपने कालजयी ग्रन्थ में उल्लिखित किया और 10 अप्रैल 1875 को इस उद्देश्य से उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। स्वामी दयानन्द की यह एक बड़ी देन है कि भूले हुए वेदों का उन्होंने फिर से परिचय कराया और वेदों के ज्ञान को समस्त भारतवासियों की विद्या का मूल कारण बताया। उन्होंने न केवल वेदों का भाष्य किया अपितु ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि आदि अनेक ग्रन्थ लिखे। महर्षि के हृदय में मातृभूमि का सर्वोपरि स्थान था और देश प्रेम की भावना उनमें कूटकूट कर भरी हुई थी। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में वे लिखते हैं कि ''यह आर्यावर्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है, क्योंकि यही सुवर्ण आदि रत्नों का उत्पन्न करती है।'' महर्षि भारत को सब प्रकार से सम्पन्न देश बनाकर इस का उत्थान करना चाहते थे। उनका लक्ष्य देश को अतीत का गौरव प्राप्त कराकर सुदृढ़ और सुसंस्कृत राष्ट्र बनाना था। राष्ट्र की रक्षा के लिए वे पांच 'स्वकार' अनिवार्य मानते थे।

1. स्वसाहित्य-महर्षि की स्वाहित्य में अटूट आस्था थी। वे वैदिक वाङ्मय के अंगभूत ग्रंथों को ही साहित्य का मूलाधार मानते थे। इन्हें वे आर्ष ग्रंथ कहते थे। उनके अनुसार वेद, वेदांग, स्मृति, दर्शन, रामायण और महाभारत हमारे स्वसाहित्य के अनमोल रत्न हैं।

2. स्वसंस्कृति-संस्कृति शब्द का बहुत व्यापक अर्थ है। संस्कृति मानव के सम्पूर्ण व्यवहार की परिचायक होती है। इसमें हमारी जीवन चर्या और विचार पद्धति में कला, साहित्य, भाषा, धर्म, मनोरन्जन और विश्वास आदि प्रतिबिम्बित होते हैं। स्वामी जी प्राचीन आदर्शों के उपासक थे परन्तु वे अंधविश्वासों, रुढ़ियों और पाखण्डों को भारतीय संस्कृति का अंग नही मानते थे। भारतीय संस्कृति के पुरातन मानदण्डों-वर्णव्यवस्था (गुण कर्म स्वभावानुसार), अध्यात्मवाद (एकेश्वरवाद) आश्रम व्यवस्था मोक्ष, अंहिसा अपरिग्रह, यज्ञ, त्याग और योग में उनकी बड़ी आस्था थी।

3. स्वभाषा-दयानन्द पहले भारतीय विचारक थे जिन्होंने यह अनुभव किया कि भारत को एक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है। इसलिए मातृभाषा गुजराती होते हुए भी उन्होंने सभी पुस्तकें हिन्दी में लिखकर हिन्दी को मातृभाषा के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

4. स्वधर्म-महर्षि दयानन्द की स्वधर्म पर अटूट श्रद्धा थी। उनके अनुसार भारत का प्राचीनतम धर्म है। यह पूर्णरुप से आस्तिक भाव लिए हुए एकेश्वरवादी है। वैदिक धर्म के अनुसार परमेश्वर किसी मठ मन्दिर गिरजाघर या गुरुद्वारे में बन्द नहीं है, अपितु वह सर्वत्र विद्यमान है। मानवतावादी धर्म है।

5. स्वदेश-स्वदेश प्रेम और स्वदेशाभिमान के बिना हम अपनी स्मिता की रक्षा नहीं कर सकते हैं। राष्ट्रीयता का एक महत्वपूर्ण पहलू स्वशासन का सिद्धान्त माना जाता है। ब्रिटिश पार्लियामेण्ट ने एक कानून, (गवर्नमैंट आफ इन्डिया एक्ट, 1858) पास करके भारत के शासन-तन्त्र को ईस्ट इण्डिया कम्पनी से लेकर सीधा अपने अधीन कर लिया था। 1 नवम्बर 1858 को तत्कालीन वायसराय और गवरनर जनरल लार्ड केनिंग ने दरबार में महारानी का एक घोषणापत्र पढ़ कर सुनाया जिसमें कहा गया था- ''हमारी प्रबल इच्छा है कि अब हम भारत में शान्तिपूर्ण उद्योगों को प्रोत्साहन दें, जनोपयोगी और उन्नति के कार्यों को आगे बढ़ायें और अपनी प्रजा की हित की दृष्टि से कार्य करें। उनकी समृद्धि ही हमारी शक्ति होगी, उनकी सन्तुष्टि ही हमारी सुरक्षा होगी और उनकी कृतज्ञता ही हमारा पुरस्कार होगा।'' महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कहा कि विदेशियों का राज्य चाहे वह माता-पिता के समान न्याय और दया से युक्त क्यों न हो, कभी हितकारी नहीं हो सकता है। सन 1874 में लिखे गये ग्रन्थ आर्याभिविनय में महर्षि दयानन्द ने अपनी भावनायें ने इस प्रकार प्रकट कीं थीं-''अन्यदेशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।'' उस समय तक स्वराज्य का विचार किसी भी राजनेता या विद्वान के दिमाग में नहीं आया था। कांग्रेस के भीष्म पितामह दाभाई नौरोजी ने सर्वप्रथम 1906 में ''स्वराज्य'' शब्द का उच्चारण किया था और होमरूल आन्दोलन के दिनों में इस शब्द का खुलकर प्रयोग होने लगा था। कांग्रेस के 1916 में लखनऊ में हुए अधिवेशन मे लोकमान्य तिलक ने ''स्वराज्य के जन्मसिद्ध अधिकार'' की घोषणा की और 1928 के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने के लक्ष्य की घोषणा की थी परन्तु महर्षि दयानन्द ने इससे कई वर्ष पूर्व ही स्वराज्य के विचार को न केवल प्रचारित किया अपितु अपने अनुयायियों में राष्ट्रप्रेम की भावनायें भर दीं जिसके फलस्वरूप देश के अनेक नौजवान स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। सन 1919 में भारत के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास का नया अध्याय आरम्भ हुआ। ब्रिटिश राजनीतिज्ञों द्वारा प्रथम विश्वयुद्ध के अवसर पर लोकतंत्र, राष्ट्रीयता और स्व-भाग्य निर्णय का समर्थन करने वाले सिद्धान्तों की घोषणाएं कीं गईं थीं। उनके द्वारा भारतीय जनता को आश्वासन दिया गया था कि युद्ध के समाप्त होते ही वे भारत में उत्तरदायी शासन दिए जाने के सम्बन्ध में कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेंगे परन्तु सन 1919 में गवर्नमैंट ऑफ इन्डिया एक्ट द्वारा जिन शासन-सुधारों की घोषणा की गई उनसे जनता संतुष्ट नहीं हुई।

रॉलेट एक्ट के दमनकारी कानून का विरोध करने हेतु स्वामी श्रद्धानन्द ने तार द्वारा अपने सहयोग देने की सहमति प्रदान की थी। दिल्ली सत्याग्रह के संचालन के लिए एक कमेटी गठित की गई इसके एक तिहाई से अधिक सदस्य आर्य सभासद थे। दिसम्बर सन 1919 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन अमृतसर में हुआ जिसकी स्वागतकारिणी समिति के अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द चुने गए थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने अछूतोद्धार पर बहुत जोर दिया। उनका कहना था कि देश की स्वतन्त्रता के लिए उन बुराइयों को दूर करना आवश्यक है जिनके कारण देश गुलाम बना था। उन्होंने अस्पृश्यता निवारण को कांग्रेस के कार्यक्रम में सम्मिलित कराया। उनका हिन्दी में भाषण देना भी एक क्रांतिकारी कदम था। सितम्बर 1920 में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन कलकत्ता में हुआ जिसमें गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव रखा था। इस आन्दोलन ने व्यापक रुप धारण किया। आन्दोलन चलाने के लिए धन की आवश्यकता थी। महात्मा गांधी ने इसके लिए तिलक फण्ड बनाकर धनराशि एकत्र करने की अपील की थी। गुरुकुल कांगड़ी के विद्यार्थी तिलक स्वराजय फण्ड एकत्र करने के लिए निकल पड़े थे। स्वामी श्रद्धानन्द और अन्य आर्य नेता महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित मार्ग के अनुरुप ही मानते थे इसलिए वे बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए और उन्होंने अपनी पूर्ण शक्ति लगा दी थी। भारत को अन्ततोगत्वा 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द के लाखों अनुयायियों ने तन, मन, धन, और अपना जीवन तक निछावर कर दिया इनमें लाला लाजपतराय, एम,जी,रानाडे, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा, इन्द्र वाचस्पति, भगवतीचरण, भगतसिंह, रामप्रसाद विस्मिल, रोशन सिंह गेंदालाल दीक्षित, मदनलाल धींगडा, भाई बालमुकुन्द, मुरलीधर, देशबन्धु गुप्ता आदि प्रमुख हैं। इन समस्त स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान के लिए राष्ट सदा ऋणी रहेगा।

नेहरू कालोनी धर्मपुर
देहरादून 248001 फोन 09336225967

thearyasamaj.org

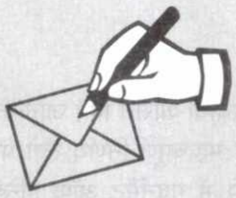

पत्र/कविता

उलझन से निकालने की कृपा करें

उत्कृष्ट शंका समाधान पृष्ट पर श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी बहुत ही अच्छे ढंग से शंका समाधान करते हैं। 31अगस्त से 6 सितम्बर 2014 वाले अंक में एक शंका उठाई गई कि मनुष्य को सौ प्रतिशत अच्छे कर्म करने के लिए संन्यास लेना आवश्यक है अथवा गृहस्थ भी कर सकता है। श्रद्धेय स्वामी जी ने इसके लिए संन्यास लेना अनिवार्य बताया है। मैं यह प्रश्न जिज्ञासुभाव से पूछ रहा हूँ कि क्या किसी प्रकार से अपने मन और इन्द्रियों पर नियंत्रण रख कर मनुष्य गृहस्थ आश्रम में भी सौ प्रतिशत अच्छे कम कर सकता है? कमल भी तो कीचड़ में खिलता है। मैं आपके माध्यम से स्वामी जी से अनुरोध करता हूँ कि मुझे इस उलझन से निकालने की कृपा करे।

डॉ देशराज गुप्ता
12– मॉडल टाउल, अम्बाला

****

लोग अपनों को ही भूल जाते हैं

परोपकारी जून द्वितीय–2014 के अंक–12 के सम्पादकीय में डा. धर्मवीर जी "आर्यसमाज के लिए चिन्तन के क्षण" लेख में लिखते है कि 26 मई–2014 को सांय राष्ट्रपति भवन में श्री नरेन्द्र मोदी के शपथ समारोह में सार्क देशों के शासनाध्यक्षों के अलावा देश की जानी मानी हस्तियाँ, नेता, अभिनेता, सभी धर्मों के प्रतिनिधि एवं सभी संगठनों के प्रतिनिधि आमन्त्रित थे। पहली बार एक बड़े समारोह में देश का हर वर्ग, हर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व था। उस समारोह से आर्यसमाज की अनुपस्थिति किसका दुर्भाग्य कहा जाए! आर्य समाज के लोगों ने संगठन को तोड़ कर अपनी स्वार्थ सिद्धि तो कर ली, परन्तु संगठन की शक्ति का सर्वनाश कर दिया। यदि आर्यसमाज के प्रतिनिधि को कोई बुलाना चाहे तो उसके पास प्रामाणिक व्यक्ति, संस्था, संगठन का नाम नहीं है। मूल बात है, सम्मान, सामर्थ्य का नाम नहीं है।

आर्यसमाज इतना कमजोर और सामर्थ्यहीन तो नहीं हुआ है कि एक राष्ट्रीय समारोह में आमन्त्रित न किया जाए। हर समय आर्यसमाज हर आन्दोलन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से साथ–साथ रहा है। जब अच्छे दिन आ जाते है तो लोग अपनों को ही भूल जाते हैं।

सुरेश अग्रवाल
167 जेसौर रोड़, कलकत्ता–55
मो. 9831847788

****

हिन्दू धर्म और संस्कृति का विस्तार असीम है

पूजा पाठ व्रत त्योहार आदि बहुत मनाते हैं। चौबीस घंटे, हर दिन, हर सप्ताह, हरमास और साल बिना पूजा के समाप्त ही नहीं होता। हमारे लिए यह अच्छा संकेत है। पंडित, पंडे–पुजारी, आचार्य स्वामी संन्यासी और धार्मिक जन सतर्कता से लगे हुए हैं।

पौराणिक भाई पूजा में नौ ग्रह शान्ति के लिए अपनी विधि करते हैं। ग्रह शान्त करने निमित प्रार्थना उपासना और पूजा करते हैं, वैसे तो नौ ग्रह की पूजा तो प्रचलित है ही। अब तो नासा के वैज्ञानिक और ग्रहों का पता लगा रहे हैं। अभी–अभी समाचार मिला कि एक–एक और ग्रह की जानकारी मिली है। वह हमारी पृथ्वी के आकार का है। ठंडी और गर्मी भी बराबर है। हो सकता है भविष्य में और ग्रहों का पता चल जाए तो नौ ग्रह के बाद अन्य ग्रहों को भी जोड़कर सबका पूजा पाठ किया जायेगा। नौ, दश ग्यारह, बारह आदि। शोचनीय अवस्था है। क्या हल निकाल सकते हैं?

सोनालाल नेमधारी
कारोलिन, बेल एयर मोरिशस
फोन (230) 4192661

****

आओ श्रद्धा पर्व मनावें

आओ श्रद्ध पर्व मानवें, श्रद्धा से कर्तव्य निभावें।
जीवित मात–पिता को निशदिन, श्रद्धा से हम शीश झुकावें।।
नित्य प्रति उठकर रोज़–सवेरे, माता–पिता की करें वंदना।
उनकी ममता भरी दया से, कभी न कोई होवे रंज ना।
बच्चे–वधू सभी मिल–जुलकर, हँस–हँस कर मन को बहलावें।।
आओ श्रद्धा पर्व.......

जीवित मात–पिता ही हमको, नई राह दिखाते हैं।
अपने अनुभव की बातों से, बोध हमें करवाते हैं।
उनके पद चिन्हों पर चलकर, उनकी खुशियाँ खूब बढ़ावें।।
आओ श्रद्धा पर्व.......

उनकी हैं ईश्वर–सी कृपाएँ, आगे–पीछे चलते जायें।
कृपा की बारिश बरसाएँ, उसमें मल–मल नहाते जाएं।
प्यार भरे साबुन से उनको, मल–मलकर हम भी नहलावें।।
आओ श्रद्धा पर्व......

उत्तम–उत्तम पकवानों से, रोज करें हम उनकी खिदमत।
सुंदर–सुंदर परिधानों से रोज़ करें पहनाकर बरकत।
नहीं कमी हो देखभाल में हाथों की लाठी बन जावें।।
आओ श्रद्धा पर्व......

चाहे हों बीमार भले ही, फिर भी चिंता करते वो।
अपने बच्चों की खातिर ही,बिस्तर में दम भरते वो।
उनके चरणों की रज लेकर, आशीष हम पाते जावें।।
आओ श्रद्धा पर्व......

मात–पिता में श्रद्धा रख, श्री राम चंद्र वनवास गए।
मात–पिता में श्रद्धा रखकर, श्रवण भी तन–मन वार गए।
मात–पिता में श्रद्धा रख, हम भी अपना सर्वस्व चढ़ावें।।
आओ श्रद्धा पर्व......

छूट जाता जब चोला उनका, पता नहीं कहाँ जाते हैं।
आज यहाँ कल वहाँ किसीके, मात–पिता बन जाते हैं।
छोड़ मृतक का श्राद्ध हम सभी, जीवित को ही गले लगावें।।
आओ श्रद्धा पर्व......

अगर मनाना श्राद्ध , पूर्ण करें कामना अधूरी।
जप–तप और दान से उनकी, करें प्रशंसा भूरि–भूरि।।
उनके आदर्शों पर चलकर, उत्तम संतति कोख बनावें।
आओ श्रद्धा पर्व.......

विमलेश बंसल 'आर्या'
फोन. 8130586002

thearyasamaj.org

'भोले! ओ भोले!'

● डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

हरिद्वार, भोले बाबा की नगरी, जुलाई मास तीसरा सप्ताह, काँवड़ मेले की रौनक। चारों और भीड़ भाड़, जन सैलाब, हजारों की संख्या में फैली जन राशि, मानो कोई बाँध टूट गया हो। लाल कपड़ों में सरकते हुए काँवड़ यात्री, मानों लाल रंग की घुँघचियाँ सड़क में रेंग रहीं हों। मैं वानप्रस्थ आश्रम में रहता हूँ, अतः इस दृश्य को बहुत नजदीकी से देखता हूँ, परखता हूँ और चिन्तित होता हूँ।

चिन्ता इस बात की कि क्या हो गया है मेरे देश को? हरिद्वार में महर्षि दयानन्द ने पाखंड खंडिनी पताका फहराई थी और आशा की थी कि अन्ध विश्वास की दल-दल छँट जाएगी लेकिन यहाँ तो अन्ध विश्वास का पूरा दरिया ही बहने लगा है। दर्शन तो मूल शंकर ने भी शंकर (भोलेशंकर) के किए थे और वह शिवरात्रि उनके लिए ऋषिबोध रात्रि बन गई थी परन्तु इन हजारों-लाखों अन्ध श्रद्धालुओं को यथार्थ शिव का बोध कब होगा? हरिद्वार से गंगाजल लेकर अपने-अपने नगरों के भोले बाबाओं (शिव) के मस्तकों पर गंगा जल चढ़ाने से क्या इनकी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाएँगीं?

यह आवश्यक नहीं कि हर बार पवित्र और शुद्ध गंगा जल ही हरिद्वार में उपलब्ध हो। अभी दो दिन पहले हरिद्वार में और पहाड़ों में बहुत तेज वर्षा हुई गंगा जल एक दम मटमैला और गंदा हो गया। मिट्टी, पत्थर, लक्कड़, घास-फूस सब पानी में बहते हुए आ रहे थे। इस गंदे जल में स्नान करना तो क्या, कोई भी आचमन नहीं कर सकता था। परन्तु उसी जल को भी काँवड़ यात्रियों ने अपने-अपने पात्रों में भर लिया। क्या भोले बाबा (शिव) उनसे पूछ पाएँगे कि मुझे इतने गंदे जल से क्यों स्नान करा रहे हो?

मेले के दिनों में चारों ओर 'बम भोले' का स्वर सुनाई पड़ता है। सारा वातावरण भोलेमय बन जाता है। भीड़ में ये स्वर सुनाई पड़ते हैं, "भोले, ओ भोले, जल्दी आ," "भोले जरा पीछे हटना," "तुम्हारे भोले हमारे भोले से छोटे हैं" इस प्रकार आराध्य भी भोले, आराधक भी भोले और दर्शक भी भोले।

क्या है इस अन्ध श्रद्धा का कारण? उत्तर है- अज्ञान और अशिक्षा। उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, उत्तराखंड आदि प्रदेशों से कई मील पैदल चल कर, कई दिनों में कावँड़ यात्री यहाँ पहुँचते हैं। कई यात्री तो बच्चों और महिलाओं को भी यहाँ पैदल ही लाते हैं। प्रायः रास्ते में वर्षा होती है, तेज धूप पड़ती है, बच्चे और बड़े भी बीमार पड़ जाते हैं। इन यात्रियों में ग्रामीण अधिक हैं और शहरी कम कारण स्पष्ट है, शहरों में शिक्षा, विकास, आधुनिकता और जागरूकता का सबेरा हो गया है परन्तु गाँवों में अभी भी ढ़ोंग, पाखंड, अन्ध विश्वास, निरक्षरता आदि का घोर अँधेरा है।

> **क्या है इस अन्ध श्रद्धा का कारण? उत्तर है- अज्ञान और अशिक्षा। उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, उत्तराखंड आदि प्रदेशों से कई मील पैदल चल कर, कई दिनों में कावँड़ यात्री यहाँ पहुँचते हैं। कई यात्री तो बच्चों और महिलाओं को भी यहाँ पैदल ही लाते हैं। प्रायः रास्ते में वर्षा होती है, तेज धूप पड़ती है, बच्चे और बड़े भी बीमार पड़ जाते हैं। इन यात्रियों में ग्रामीण अधिक हैं और शहरी कम कारण स्पष्ट है, शहरों में शिक्षा, विकास, आधुनिकता और जागरूकता का सबेरा हो गया है परन्तु गाँवों में अभी भी ढ़ोंग, पाखंड, अन्ध विश्वास, निरक्षरता आदि का घोर अँधेरा है।**

एक दूसरा पक्ष भी है। गाँवों में ऐसे नव युवकों की तादाद अधिक होती है जो मौज-मस्ती, मठर गस्ती और पिकनिक मनाने के लिए यात्रा के बहाने हरिद्वार आते हैं। खर्चा कुछ करना नहीं, रास्तों में जगह-जगह श्रद्धालु लोग चाय, बिस्कुट, हलवा, पूरी, छोले, केले आदि की व्यवस्था कर ही देते हैं। जगह-जगह पर टैंट और दरियाँ सुस्ताने और लेटने के लिए मिल ही जाती है। दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह की संख्या मे नव युवकों के ग्रुप गाते-बजाते, नाचते-गाते, धामा चौकड़ी करते, शोर गुल मचाते रास्तों में सर्वत्र दीख ही जाते हैं। न कोई संकोच और न कोई भय। पुलिस से ये नहीं डरते, पुलिस वाले ही इनसे डरते हैं। यदि कोई पुलिस वाला गलती से इन्हें कुछ कह बैठे तो ये भिरड़ की तरह चिपट जाते हैं। नारे बाजी, रास्ता जाम, यही है काँवड़ यात्रियों का काम।

मैंने प्रायः देखा है कि जहाँ-कहीं भी ये नव युवक रास्ते में विश्राम के लिए ठहरते हैं, वहीं पर नशा करना शुरू कर देते हैं। सिगरेट में भाँग आदि भर कर पीना तो आम बात है। यदि कोई इनसे पूछे कि भाँग क्यों पी रहे हो तो ये स्पष्ट कह देते हैं कि भोले बाबा भी भाँग पीते थे। जिस भोले बाबा की ये जय-जय कार करते हैं उसी भोले बाबा के बारे में पार्वती को माध्यम बनाकर ये ऐसी अश्लील पंक्तियाँ बोलते हैं कि एक समय व्यक्ति नहीं सुन सकता। लगभग एक सप्ताह तक ये सरकार के दामाद होते हैं। सारा प्रशासन इनकी सेवा-शुश्रूषा में जुटा रहता है। चाहे प्राइवेट और सरकारी बसें ठहर जाएँ, रास्ता जाम हो जाए, पूरा ट्रैफिक बदलना पड़े लेकिन इनके लिए हर समय खुली सड़कें चाहिए, जैसे ये किसी देश के राजकुमार हों। दिल्ली जैसे भीड़ भाड़ वाले शहर में भी इनके रास्ते में दूसरे वाहन नहीं चल सकते तथा श्रद्धालु इनकी सेवा में प्रतीक्षारत रहते हैं।

मेरी दृष्टि में इस प्रकार की यात्रा क्या समय और पैसे का दुरुपयोग नहीं हैं? घर के काम तथा स्कूल-कॉलेजों की पढ़ाई छोड़ कर एक सप्ताह तक सड़कों पर जूते रगड़ना, काँवड़ का वजन लादकर चलना, थकान से बीमार पड़ जाना, कौन सी बुद्धिमानी है। आजकल तो कम्पटीशन का जमाना आ गया है। जैसे टी.वी. में देखा होगा, उसकी कमीज मेरी कमीज से अधिक सफेद क्यों? ठीक यहाँ भी ऐसा होता है। उस गाँव के भोले बाबा की डोली या झाँकी हमारे गाँव की झाँकी से बड़ी क्यों? उसी कम्पटीशन में भोले बाबा का वजन अलग-अलग झाँकियों में एक किलो से बढ़ कर एक क्विंटल तक हो जाता है। जिस भोले बाबा की पालकी को चार नव युवक ढ़ो रहे हों, उसका कितना भार होगा, इसकी कल्पना आप स्वयं कर सकते हैं। कहीं-कहीं ग्रामवासी तो एक-एक झाँकी के लिए एक-एक लाख रुपए खर्च कर देते हैं और वे झाँकी को इस शान से ढ़ोकर ले जाते हैं मानो कोई किला फतह कर लिया हो। जितना खर्चा ये नव युवक एक सप्ताह में कर देते हैं, उतने में तो एक कक्षा की एक साल की पढ़ाई की जा सकती है।

मैं ये तो नहीं कहना कि सभी काँवड़ यात्री आस्था एवं श्रद्धा विहीन होते हैं कुछ में श्रद्धा तो होती है परन्तु उसको अन्धश्रद्धा कहा जा सकता है। आस्था और श्रद्धा के लिए ज्ञान-अज्ञान, कर्तव्य-अकर्तव्य या भले-बुरे का विवेक तो होना चाहिए। आस्था है तो, मन की निर्मलता, एकाग्रता, साधनों की पवित्रता, पवित्र वेद वाणी, सर्वश्रेष्ठ आराध्य आदि का होना भी तो आवश्यक है। परन्तु इनमें से उनके पास कुछ भी नहीं है। अतः मैं यही कहना चाहता हूँ कि आर्य समाजियों को केवल साप्ताहिक हवन-यज्ञ तक सीमित नहीं रहना चाहिए। उन्हें काँवड़ यात्रा को एक चुनौती के रूप में स्वीकार करना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने तो सच्चे शिव (ईश्वर) की खोज कर ली थी लेकिन मेरे इन भोले-भाले काँवड़िए भाइयों को सच्चे शिव के दर्शन कब होंगे?

230, आर्य वानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर (हरिद्वार) उत्तराखंड
मो. 9639149995

यज्ञ प्रेमी माँ नहीं रही

श्रीमती हर्ष मुंजाल जी का निधन दिनांक 03.09.2014 को नई दिल्ली में हो गया। आप पिछले कुछ वर्षों से रुग्ण अवस्था में थीं लेकिन परमपिता परमात्मा की आज्ञानुसार आपने इस देह का त्यागा।

श्रीमती हर्ष जी, श्री योगेश मुन्जाल जी की धर्म पत्नी थी। और श्री सत्यानंद मुन्जाल की पुत्र वधु थी। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ कर गई हैं। आप सारे दायित्वों से निवृत हो चुकी थी। यज्ञ से आपका विशेष लगाव था। श्रीमती हर्ष मुन्जाल जी ने महिलाओं का एक छोटा सा संगठन बनाया जिसकी 60 महिला सदस्यायें हैं। इस संगठन की एक-एक महिला के यहां प्रति मास क्रमानुसार यज्ञ करवाया जाता है। श्रीमती हर्ष मुंजाल स्वयं यज्ञ करवाती थी। उन्होंने अपने पुत्र पुत्रियों को भी इसी प्रकार के संस्कार दिये और वे भी यज्ञ से जुड़े हुए हैं। मुंजाल परिवार के प्रत्येक सदस्य के घर पर यज्ञशाला है और वहां प्रतिदिन यज्ञ होता है।

प्रार्थना सभा में डॉ. महेश विद्यालंकार एवं आचार्य अखिलेश्वर जी के प्रेरक प्रवचन हुए। उपस्थित जन समूह में आर्य जगत् के संन्यासीवृन्द एवं प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे। साथ ही उद्योग जगत् से भी भारी संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित थे।

आर्य जगत परिवार परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्राप्त हो और उनके शोकाकुल परिवार को यह अपार दु:ख सहन करने की शक्ति मिले।

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 24-25/9/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

डी.ए.वी. पटियाला में हुआ संस्कृत-सप्ताह का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, भूपिन्द्रा रोड़, पटियाला की इकाई 'आर्य युवा समाज' द्वारा 'श्रावणी–उपाक्रम' के उपलक्ष्य में 'संस्कृत–सप्ताह' बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। बच्चों का संस्कृत भाषा के प्रति रूझान पैदा करने एवं इसके प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से स्कूल में विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई जिनमें संस्कृत पढ़ने वाले लगभग 600 विद्यार्थियों ने बड़े ही उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतिदिन 'वैदिक मन्त्रोच्चारण' के साथ हवन करते हुए दिनचर्या का प्रारम्भ होता।

समापन समारोह पर 'संस्कृत–संगोष्ठी' का आयोजन किया गया जिसमें संस्कृत के उच्च कोटि के अनेक विद्वानों ने अपने विचारों से 'समाज में संस्कृत के महत्त्व', 'संस्कृत की अन्य भाषाओं को देन' एवं 'संस्कृत के गौरवमयी साहित्य' की महत्त्वपूर्ण जानकारी देकर बच्चों को 'संस्कृत–भाषा' के पठन–पाठन के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. इन्द्रमोहन सिंह (पूर्वाध्यक्ष संस्कृत विभाग एवं अध्यक्ष, वाल्मीकि चेयर, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला) ने अपने सम्बोधन में कहा, "आज संस्कृत भाषा के पठन–पाठन में आई कमी के कारण ही समाज में संस्कारहीनता निरन्तर बढ़ती जा रही है। संस्कृत के अध्ययन से ही व्यक्ति संस्कारवान व सुसंस्कृत बनता है।

प्राचार्य एस.आर. प्रभाकर ने मुख्य अतिथि व अन्य विद्वानों का स्वागत किया और कहा, भारत की गौरवमयी संस्कृति संस्कृत भाषा में ही समाहित है।

संगोष्ठी में डॉ. महेश गौतम (हिन्दी एवं संस्कृत विद्वान) प्रो. सुभाष शर्मा, डॉ. आशीष तथा प्राचार्य निखिल रंजन (मानसा) ने अपने विचार रखे। डॉ आशीष (शोधकर्त्ता, पंजाबी विश्वविद्यालय)

शान्ति–पाठ के साथ 'संस्कृत–सप्ताह समारोह' सम्पन्न हुआ

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल खेडा खुर्द की प्रधानाचार्या श्रीमती देविका दत्त हुई सम्मानित

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल खेडा खुर्द की प्रधानाचार्या श्रीमती देविका दत्त को शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय योगदान देने हेतु शिक्षक सम्मान 2014' के लिए कोऑर्डिनेशन कमेटी ऑ पब्लिक स्कूल (रजिस्टर्ड) दिल्ली ने इंडिया इंटरनेशलन सेंटर, लोदी रोड नई दिल्ली में शाल, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न से सम्मानित किया। यह सम्मान श्रीमती दत्त के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र तथा समाज सुधार कह दिशा में उनके योगदान के लिए प्रदान किया गया है। कोआर्डीनेशन कमेटी कई वर्षो से शिक्षा क्षेत्र में कार्यकर शिक्षा निदेशकों शिक्षा अधिकारियों, प्रोफेसरों, रीडरों, प्राचार्यो और अध्यापकों को सम्मानित करती आ रही है। डी.ए.वी खेडा खुर्द छात्र–छात्राओं के सर्वाङ्गीण विकास की दिशा में शिक्षण के नये–नये प्रयोग किए जा रहे हैं जिसके चलते इस संस्था की समाज और अभिभावकों का विश्वास प्राप्त होता जा रहा है। श्रीमती दत्त की इसमें विशेष भूमिका रही है।

आर्य युवा समाज, जम्मू एवं कश्मीर द्वारा बाढ़ पीड़ितों की सहायता

आर्य युवा समाज, जम्मू एवं कश्मीर के सदस्यों के द्वारा कश्मीर घाटी में आई भीष्ण बाढ़ से प्रभावित लोगों के लिए खाद्य सामग्री भेजी गई। दो खेप में भेजी गई इस सामग्री की पहली खेप 9 सितम्बर 2014 को आर्य युवा समाज की ओर से एस.एच.ओ, दुमाना क्षेत्र, के माध्यम से भेजी गई एवं दूसरी खेप 13 सितम्बर 2014 को भेजी गई। एकत्रित सामग्री में बिस्किट एवं रस के पैकेट तथा बोतलबंद पेय जल एंव अन्य जरूरत की वस्तुएँ शामिल थी।

आपात कालीन स्थिति में आर्य समाज के सदस्य हमेशा आगे आकर सहायता करते हैं। इसी परंपरा को कायम रखते हुए, आर्य समाज के राष्ट्रीय प्रधान श्रद्धेय पूनम सूरी जी सत्प्रेरणा से, आर्य युवा समाज जम्मू एवं कश्मीर के सदस्यों तथा महाराज हरिसिंह एग्रिकल्चरल कॉलिजिएट स्कूल, नागबनी के छात्रों एवं कर्मचारियों ने मुक्तहस्त से सामग्री देकर अपने सेवा संकल्प को पूर्ण किया।

मुद्रक व प्रकाशक – एस.के.शर्मा, सभा मंत्री द्वारा मदन गोयल के प्रबंध में अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय 'आर्य जगत्' आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – श्री पूनम सूरी